आज
वह कल्पना
लोक में
खोया है...
BUGS BUN

स्टार उन्हें कहते हैं, जो आकाश में चमकते हैं। स्टार उन्हें भी कहते हैं, जो सिनेमा के पर्दे पर मचलते हैं। स्टार ऐसे भी होते हैं, जो फौजी अफसरों के कंधों पर लगते हैं। स्टार वे भी होते हैं, जो जूते के सोल में ठोके जाते हैं। पर यह कहानी उस ग्रीन स्टार होटल की है जिसे किराये पर लेकर मोटू पतलू चला रहे हैं।

मोटू पतलू के साथ उनके सभी साथी ईमानदारी से होटल में काम कर रहे हैं। यहाँ तक कि वेटर बने घसीटाराम ने भी बीस साल तक इन्सान बने रहने और किसी भले आदमी का गला न दबाने की कसम खाई है। अब यह समय की बात है कि होटल में काम करने वाले हर आदमी के साथ कोई न कोई मुसीबत नत्थी है। जैसे आंखों के रोगों के माहिर डाक्टर झटका पहले होटल के किचन में कुक थे। अब होटल के मेहमानों की सेहत की देखभाल करते हैं। इनके साथ मुसीबत यह है कि लोग कहते हैं, सबको बराबर समझो। सबको एक आंख से देखो। पर डाक्टर झटका किसी को दोनों आंखों से भी नहीं देखते। पतलू होटल का किचन इंचार्ज है, पर इतना ऊंचा सुनता है कि किसी के मुँह की तो क्या अपने दिल की बात भी नहीं सुन पाता। डिटेक्टिव चेलाराम 'रूम अटेंडेन्ट' हैं। उसका ख्याल है, जैसे मछलियां दरिया में पकड़ी जाती हैं, ऐसे ही स्मगलर और दूसरी प्रकार के अपराधी होटल में पकड़े जा सकते हैं। जासूसी के इस चक्कर में वह पूरा घनचक्कर बना हुआ है। मोटू ग्रीन स्टार होटल का जनरल मैनेजर है। इसका असूल है, कि ग्राहक को किसी कीमत पर भी नाराज मत करो। अपनी ही मुसीबतों में फंसे इन कलाकारों से भेंट कराने के लिए अब हम आपको लिये चलते हैं…ग्रीन स्टार होटल।

यह क्या पिला दिया तुमने ? शूगरकेन जूस ऐसा होता है ?
पहले आप मुझे ही बता दीजिए सर ! वेटर को ज्यूस चखाने का क्या यही एक तरीका था आपके पास ।

यह क्या गुड़ घोल लाये हो पानी में ?
गुड़ नहीं जी 'शीरा' घोला है। वह गाढ़ा जूस जैसा होता है।
वेटर ठीक कह रहा है सर। जैसे होती है 'प्रीजर्व' की हुई हेमा मटर। 'प्रीजर्व' की हुई पम्फलेट मछली। प्रीजर्व की हुई फूल गोभी। ऐसे ही शीरा होता है, प्रीजर्व किया हुआ गन्ने का रस।

इस गंद को प्रीज़र्व किया हुआ गन्ने का रस कह रहे हो। तुम वेटर को जूस चखाने का तरीका पूछ रहे थे, सही तरीका यह है हमारे पास।

ऐसे उल्लुओं की तरह मेरी ओर क्या देख रहे हो। दुनिया में अकलमन्दों का जब बेवकूफों से पाला पड़ता है, तो ऐसा ही होता है।

वेटर ! ऐ वेटर ।
तुम्हें आवाज पड़ रही है उधर ।
मेरे जिस्म की चूलें हिल रही हैं। तुम ले लो उनका आर्डर
उनका फादर ! मैं लेलूं उनका फादर ?

हां जी ! कहां है आपका फादर ?
वट डू यू मीन बाई दैट ?
हमें एक प्लेट सलाद चाहिए।

एक प्लेट चुकंदर का सलाद लाओ।
छछून्दर का अचार लाओ।
क्या बात है ? कानों में डाट लगी है क्या ?
हमें चुकंदर का सलाद चाहिए ?
बन्दर की औलाद चाहिए ?

ओफ्फो ! यह किस होटल में आ गये हम ? अपने मैनेजर को भेजो ?
गाजर की भाजी ? यूं कहिये ना

क्या बात है सर ? कोई परेशानी है आपको ?
खाक परेशानी है। हमने वेटर से कहा, हमें चुकन्दर का सलाद चाहिए। तो वह कहता है, क्या बन्दर की औलाद चाहिए ?
बड़ा बदतमीज है। उसने यह भी नहीं सोचा कि बन्दर को कितना गुस्सा आयेगा, यह सुनकर।
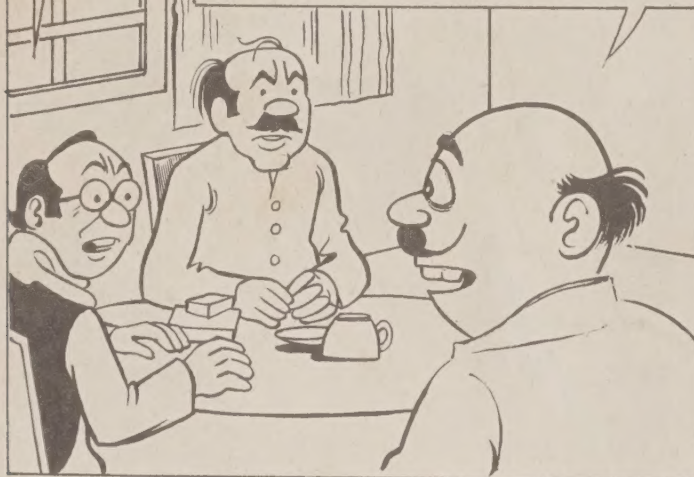
होटल की बजाये लगता है हम किसी पागलखाने में आ गये हैं।
चलो, ो, गोली मारो इस होटल को।
अरे मेरी बात तो सुनो। ग्राहकों को खुश करना मेरा परम धर्म है मैं तो संसार के हर आदमी को खुश देखना चाहता हूँ।
यह देखने के लिए शीशे में अपना मुँह देख लो।
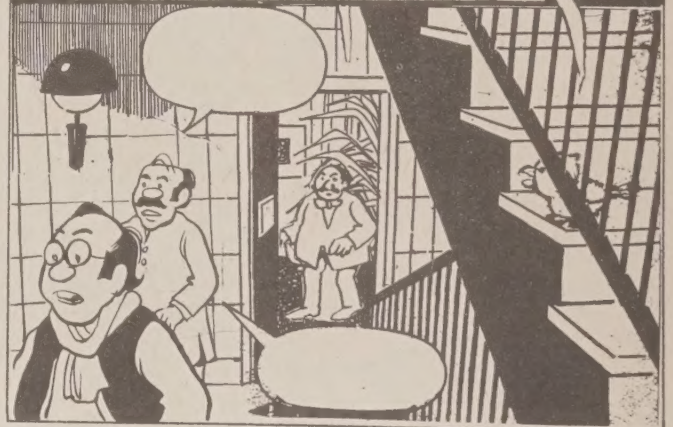
दूसरी ओर होटल में ठहरे एक मेहमान को डाक्टर की जरूरत पड़ गई थी।
हैलो डाक्टर ! मेरे मुंह से खून आया है।
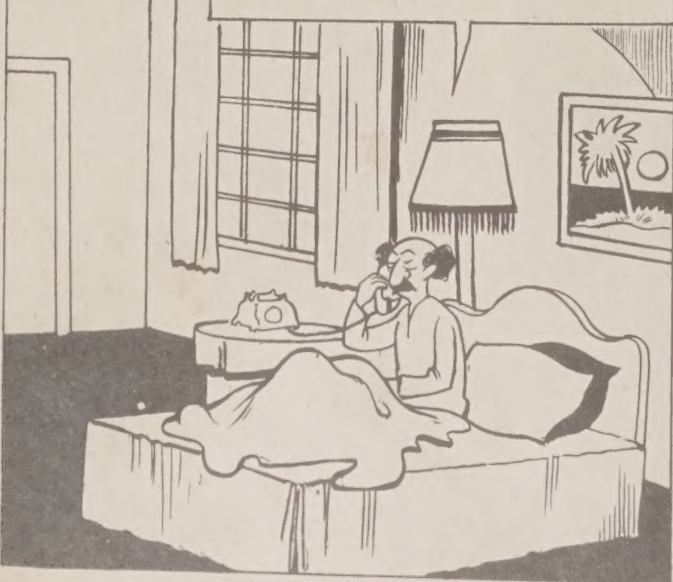
आज़ मैं दांतों को ब्रुश कर रहा था तो ऐसा लगा जैसे मेरे मुंह से खून गया है।
क्या कहा खून हो गया है ? मिल गया जासूसी का केस।
नहीं नहीं वह कह रहे हैं, मुंह से खून गया है।
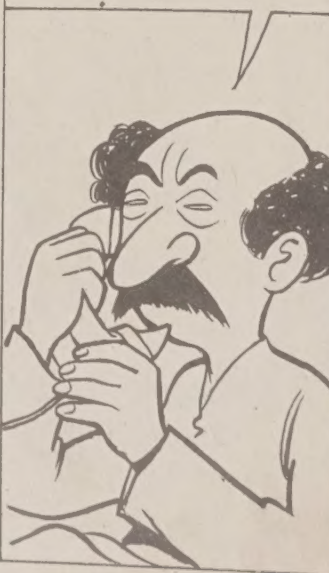
खून आना तो बहुत खतरनाक बीमारी है। इसका मतलब है कि मरीज का पेट खराब है।
और डाक्टर का दिमाग खराब है। खून आने का मतलब यह भी तो हो सकता है कि जिस्म में खून अधिक हो और दूध के भरे गिलास की तरह छलकने लगा हो।

मैं अपने हर मरीज के साथ पूरा पूरा इंसाफ करता हूं।
इंसाफ ?
हां इंसाफ। दूध का दूध और पानी का पानी।
मतलब है आप मेर खून को पानी कर देंगे और दूध समझ कर पी जायेंगे ?
नहीं, नहीं। हम तुम्हें डूश देंगे।
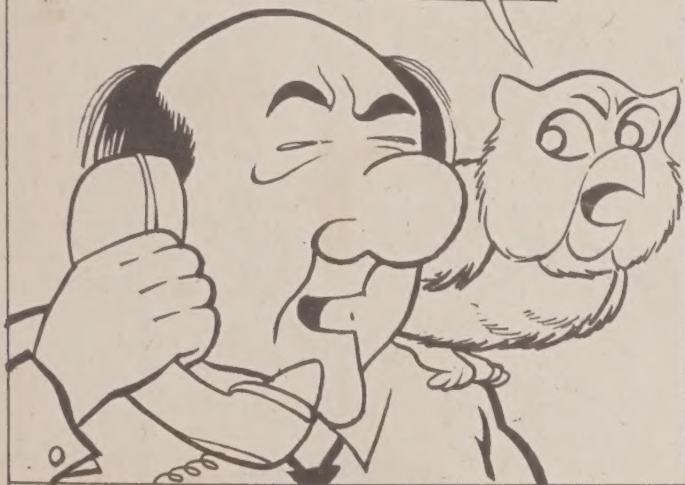
तुम्हारा पेट खराब है। और जिस प्रकार की आपको बीमारी है उसका सही इलाज है डूश।
ठीक है डाक्टर साहब, मुझे जल्दी दीजिए डूश।
आप किस कमरे से बोल रहे हैं ?
रूम नं० ६९ ? ठीक है। समझ गया। मैं अभी दवाईयां देकर अपने कम्पौन्डर को भेज रहा हूं।

दूसरी ओर घसीटाराम रूम नं० ६८ के सामने से गुजरा तो वहां ठहरे मेहमान ने उसे आर्डर दिया...
सूप लाओ, गर्मा गर्म सूप। टिमाटर का सूप।
सूप-सूप
70
69
68
67

घसीटराम सूप का नाम सुनते ही सर पर पांव रखकर भाग लिया। पिछले सप्ताह सूप ने उसे नाकों चने चबवा दिये थे।
राम बचाये इस सूप से। ऐसा लगाते है जैसे सर पर जूत पड़ा हो।

उधर डाक्टर झटका ने पतलू को कम्पाउन्डर का काम सौंप दिया।
जाओ तुम उस खून आने वाले रोगी को ठीक करो।
फोन आने वाले जोगी को भीक दो ? क्या फोन पर भीग मांगी है किसी ने ?

रोगी का इलाज करना है बहरे ! तुम्हें ऊंचा सुनाई देता है, इसलिए सबकुछ मैंने इस कागज पर लिख दिया है। पहले टब में गर्म पानी भरना । फिर पानी में यह दबाइयां डाल देना और मरीज के कपड़े उतार कर उसे पानी में लिटा देना ।
और यह है रोगी का रूम नम्बर ।
89
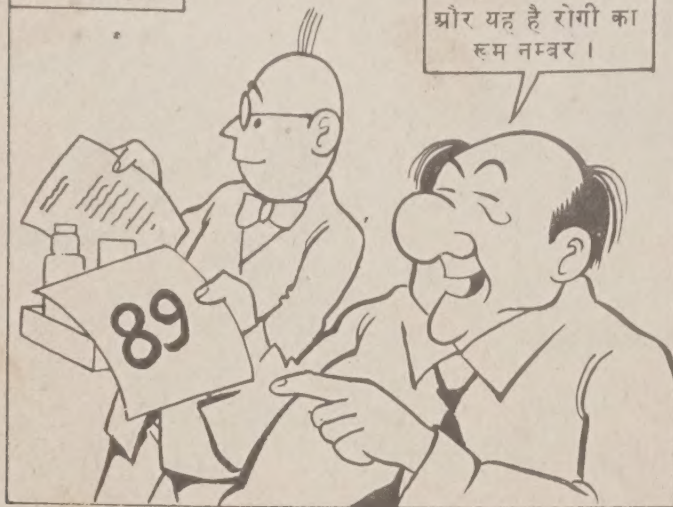
पतलू के हाथ में कमरे का नम्बर उलटा हो गया और वह गलत कमरे के दरवाजे पर पहुंच गया ।
यह है कमरे का नम्बर कागज पर पढ़ लूं मुझे क्या करना है ? हां, रोगी को डूश देना है ।
71
70
69
68
68

ले आये सूप ?
हां अभी दे रहा हूं डूश ।

यह क्या कर रहे हो ? ने सूप का आर्डर दिया था । क्या यह सूप पिलाओगे मुझे ?
हां, यह डूश दूंगा आपको । आप इतना ऊँचा क्यों बोल रहे हैं ? क्या मैं बहरा हूं ?

मैं कह रहा हूँ सूप—! सूप !!
हां हां । सुन लिया डूश ! डूश । अब कपड़े उतारो आराम से ।
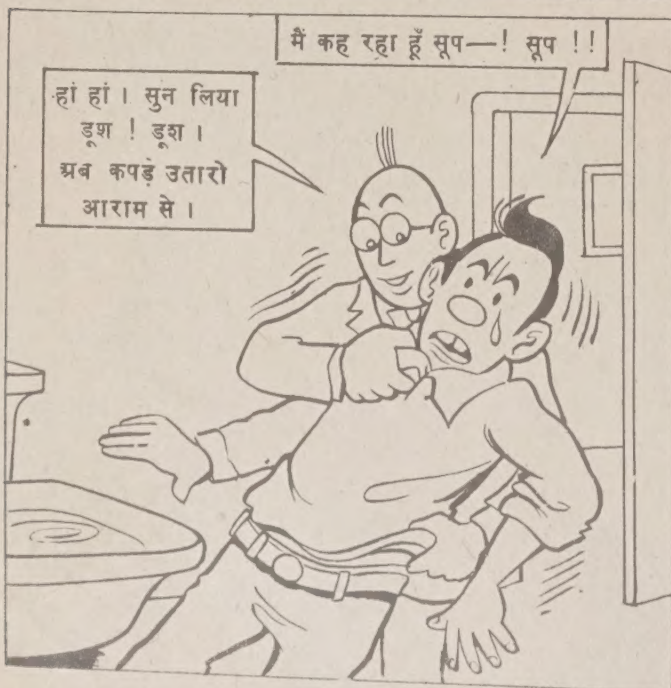
वह आदमी कितना भी तगड़ा सही, पर पतलू की जोर जबरदस्ती से बच नहीं सका । और पतलू ने उसके कपड़े उतार दिये ।
किस होटल में आ फंसा । मुझे नहीं पता था, कि यहाँ सूप और डूश में कोई अन्तर नहीं है ।
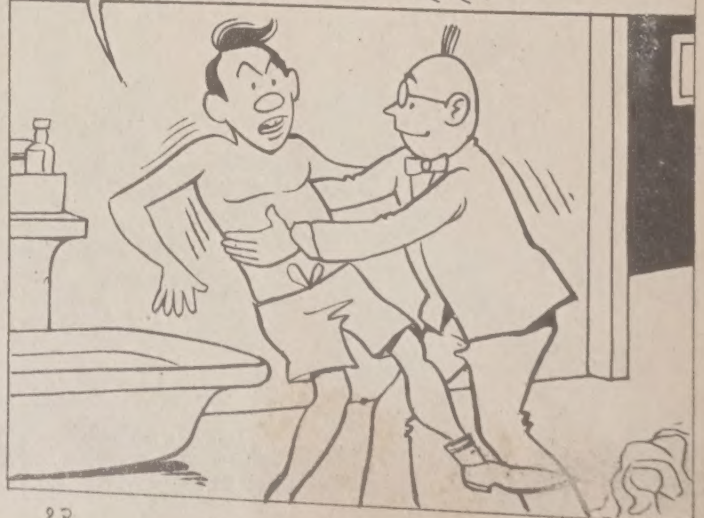
ओर इस प्रकार पतलू ने उसे जबरदस्ती दवा मिले पानी के टब में धकेल दिया ।
अरे मार दिया, बचाओ । बचाओ ।

यहीं पड़ रहना । जब तक रोग ठीक न हो जाये बाहर मत निकलना ।
मैं बाहर नहीं निकलूंगा तो तुम्हारे जिस्म से जान बाहर कैसे निकालूंगा ।

पतलू वापस अपनी सीट पर आया तो उसके फोन की घंटी बज उठी ।
अब क्या मुसीबत आई ? कोई एक पल चैन से नहीं बैठने देता ।

हैलो ! मैं रूम सर्विस से बोल रहा हूं ।
देखिए, डाक्टर ने मुझे डूश देने को कहा था ।

अब तक डूश नहीं दिया ।
अब तक सूप नहीं दिया ? अभी भिजवा रहा हूं सर ।

ऐ घसीटा राम ! तुम्हें सूप का आर्डर मिला है ?
हां मिला है ।
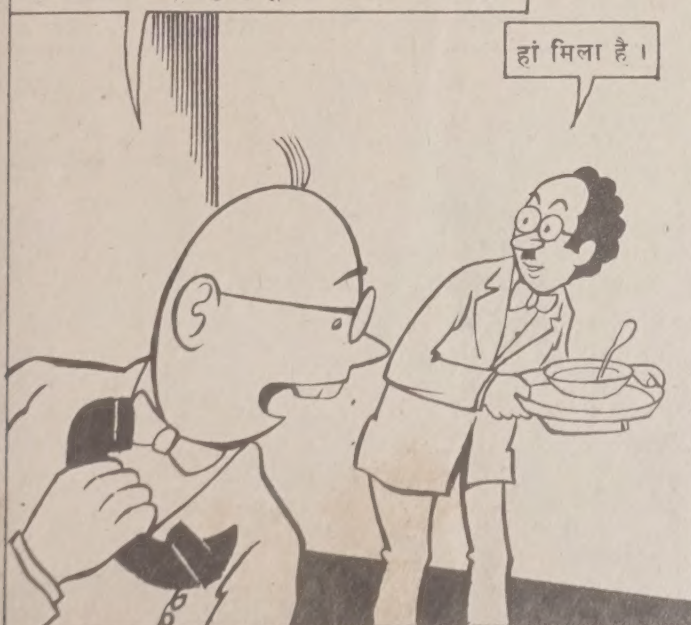
तो जल्दी पहुंचाओ । मेहमान सूप के लिए शोर मचा रहा है ।
अभी ले जा रहा हूं जी ।
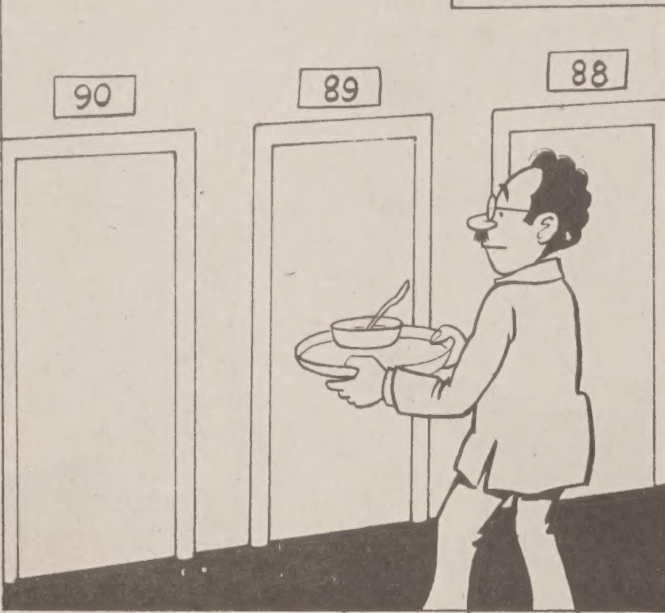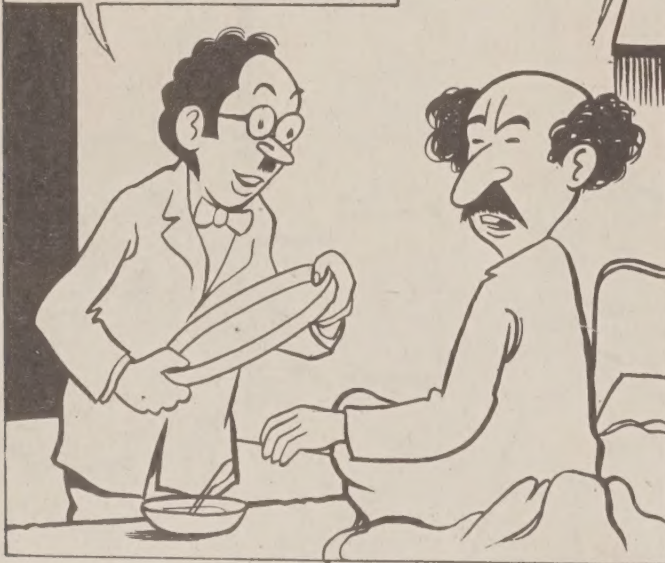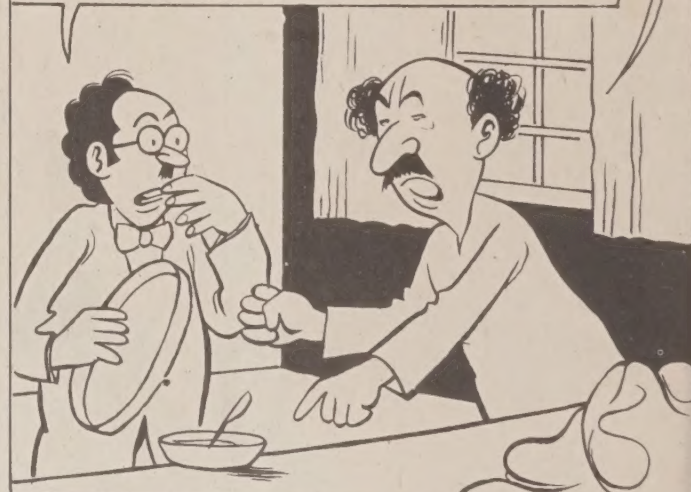
दफा हो जाओ यहां से। मैं एक बीमारी का इलाज करवा रहा था, यहां तो हर आदमी एक बीमारी है।

क्या मुसीबत है। होटल में मेरा काम लोगों को खाना पीना देना है। और यहां हर आदमी मुझे खाने को दौड़ रहा है।

89

89

87

आपने सूप का आर्डर दिया था ? लीजिए, हाजिर है आपका सूप !

बेडा गर्क हो तुम्हारा, फिर डूश देने आये हो !

मैं कह रहा हूं सूप लीजिए सर, सूप ।

मुझे नहीं पता, तुम सूप किसे कहते हो और डूश किसे कहते हो । मुझे कुछ नहीं चाहिये । तुम दफा हो जाओ यहां से ।
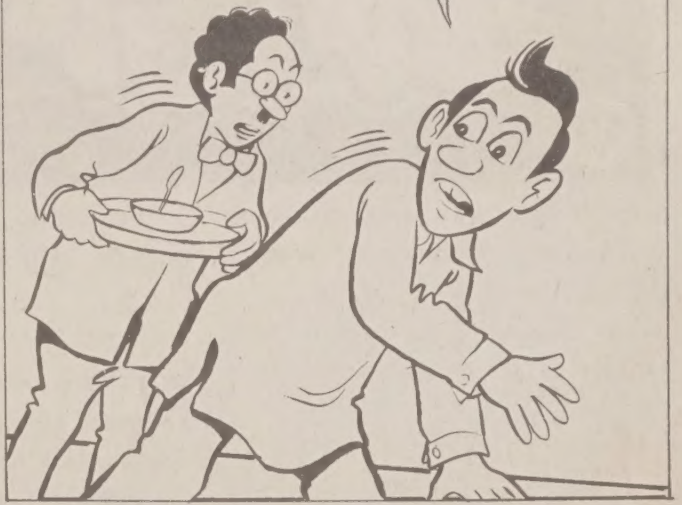
आप टिप देने से घबरा रहे हैं सर ! आज सवेरे से एक फूटी कौड़ी नहीं मिली है सर । मैं आपको यह सूप देकर ही रहूंगा सर ।

जो मुझे दे रहे हो वह मैं तुम्हें ही दूंगा ।

और इस भाग दौड़ और धींगा मस्ती में घसीटाराम खुद पानी के टब में जा पड़ा ।

हे भगवान बीस साल के तजुर्बे में ऐसा अनर्थ कभी नहीं हुआ । इस बात का गम नहीं कि मैं डूश के टब में बैठकर सूप पी रहा हूं, या सूप में बैठकर डूश पी रहा हूं पर रोना इस बात का है कि अब मुझे टिप कौन देगा ?

आगामी अंक में इन जोकरों से फिर मिलना न भूलिए ।

हां बहन···अगर आपको इस बात का विश्वास न हो तो आप अपने पति से पूछ लीजिये।'

सब लोग सन्नाटे में खड़े रह गए थे शोभना ने सेठ साहब के पास जाकर कांपती आवाज में पूछा···

'नाथ···यह मैं क्या सुन रही हूं?'

'शोभना···!' सेठ साहब की आवाज भर्रा गई।

'आपको मेरी सौगंध है नाथ···सच-सच बताइये।'

'शोभना ···तुमने जो कुछ सुना वह सच है।'

'नहीं ···शोभना हड़बड़ा गई।

'हां शोभना···भगवान जानता है यह सच है।'

'तो···फिर मेरी···मेरी पद्मिनी कहां है?'

'शोभना! तुम्हारी पद्मिनी को मैंने उसी बाढ़ में खो दिया था जिस जगह मुझे मुन्नी एक पेड़ के गुद्दे से लिपट हुई मिली थी।'

'नहीं···!'

शोभना सन्नाटे में पत्थर की मूर्ति के समान खड़ी रह गई···यशपाल ने भर्राई हुई आवाज में कहा—

'यह सच है बहनजी ···आप जिसे पद्मिनी समझती हैं वही मेरी भानजी मुन्नी है, जिसे आपने और सेठजी ने अपने सीने से लगा कर पाला पोसा है···उसे असीम प्यार दिया है···आप लोग मुन्नी की शादी से इसलिए घबराते थे कि आपकी बेटी सदा के लिए आपसे दूर चली जाएगी ···आप किसी ऐसे वर कि तलाश में थे जो आपका घर-जंमाई बनकर रहे।

'लेकिन आप लोगो को यह मालूम नहीं था कि मुन्नी बचपन ही से अविनाश से प्यार करती थी···और इसलिए अपनी शादी रोकती चली आ रही थी अचानक भाग्य से उसे अविनाश मिल गया और वह खुशी-खुशी अपना घर बसाने के लिए सहमत हो गई।'

'मगर···मगरफिर ···!' सेठ साहब ने कहा, 'वह इस से इंकार क्यों करने लगी?'

'इसलिए कि आप लोनों को यह नहीं मालूम कि मुन्नी का पहला पति अब भी जिंदा है।'

'पहला पति···?' अविनाश हड़बड़ाकर कई कदम पीछे हट गया।

'पहला पति जिंदा है?' सेठ साहब की आखें आश्चर्य से फटी रह गईं।

सारे बराती भौंचक्का से रह गए। यशपाल ने कहा—

'हां···यह सच है···धर्मपाल उन दिनों कुछ घटनाओं से इतने भयभीत हो गये थे कि वह किसी प्रकार जल्दी-से-जल्दी बेटी का बोझ कंधों से उतार देना चाहते थे ··· मेरे और मेरी बहन के प्रबल विरोध पर भी धर्मपालसिंह ने मुन्नी का विवाह अपने एक दोस्त के बेटे से कर दिया। उस समय मुन्नी की आयु आठ बरस से अधिक न होगी। और लड़के की आयु लगभग ग्यारह-बारह बरस···मैंने धर्मपालसिंह को बहुत समझाया कि बाल-विवाह बच्चों के साथ एक बहुत बड़ा अन्याय है···ऐसा मत करो···न जाने बड़े होकर बच्चे एक-दूसरे को पसंद करें या न करें, दोनों के स्वभाव एक-दूसरे से मिलें या न मिलें···या कोई और बात हो जाए···।'

'धर्मपाल ने मेरी एक न सुनी और मुन्नी का विवाह कर दिया···लेकिन भगवान कुछ और चाहता था···जब मुन्नी की डोली जा रही थी उस समय चारों ओर भयानक बाढ़ आई हुई थी···उसी बाढ़ में पुल टूट गया और सारे बाराती गाड़ियों समेत बह गए और डूब मर गए···मुन्नी के सास-सुसर का कुछ निशान तक नहीं मिला···मुन्नी का पति भी बाढ़ में बह गया···मुन्नी को सेठ साहब ने पाया और उसे अपनी बेटी पद्मिनी की जगह पद्मिनी बनाकर ले आए···।'

'मुन्नी यही समझती थी कि उसका पति मर चुका है—इसीलिए वह अविनाश से शादी करने पर सहमत हो गई थी लेकिन उस बेचारी को नहीं मालूम था कि उसका पति भी बच गया था और अभी जिंदा है—उसने भी दूसरी शादी नहीं की, आज मुन्नी ने इस शादी से इन्कार कर दिया···क्योंकि वह जिसके साथ पहले पवित्र अग्नि कुंड के गिर्द फेरे ले चुकी है उसको अपना पति, अपना देवता और अपना भगवान मानती है—अब आप लोग स्वयं ही बताइए कि मुन्नी इस हालत में क्या दूसरी शादी करने का पाप मोल ले सकती थी?'

चारों ओर मौत का-सा सन्नाटा छा गया···सब लोग विस्मय से मुन्नी को देख रहे थे जो चुपचाप आंखें झुकाए खड़ी थी··· उसकी आंखों से टप-टप आंसू नीचे गिर रहे थे। अविनाश धीरे-धीरे आगे बढ़ा··· उसने अपने सेहरे के फूल मुन्नी के पैरों में डाल दिए···मुन्नी हड़बड़ाकर पीछे हटती हुई कांपती आवाज में बोली—

'यह···यह क्या करते हो अविनाश?'

'वही···जो एक भक्त को···एक देवी के साथ करना चाहिए···मुन्नी, मैं थोड़ी देर के लिए तुम्हारी ओर से बहक जरूर गया था लेकिन वास्तविकता जानकर मुझे अनुभव हुआ कि मैं एक देवी का अपमान कर रहा था···आज तक तो मैं तुमसे केवल प्यार ही करता था लेकिन आज से मैं तुम्हारी पूजा किया करूंगा···मुन्नी आज से मैं तुम्हें देवी समझूंगा···।'

पद्मिनी सुबक उठी तो सेठ साहब धीरे-धीरे आगे बढ़े और उन्होंने भर्राई आवाज से कहा—

'बेटी! अगर सच्चई यही थी तो मुझे सचमुच क्यों नहीं बता रही थी?'

'डेंडी, मैं···मैं माँ के सामने यह सच्चाई नहीं खोलना चाहती थी कि कहीं उन्हें दुःख न पहुंचे···उन्होंने बचपन से मुझे अपने कलेजे से लगाकर यूं पाला है कि मुझे कभी अपनी मां का अभाव अनुभव नहीं होने दिया।'

अचानक शोभना ने आंसू पोंछे और आगे बढ़कर बोली—

यह बात तू कह रही है बेटी ···यह तो मुझे कहनी चाहिए थी···मैं तो तुझे अपनी सगी बेटी ही समझती थी लेकिन तुमने मेरी सगी बेटी न होते हुए भी कभी एक क्षण के लिए मुझे उसकी कमी महसूस नहीं होने दी—तू मेरी आंखें बनकर रही···मेरी लाठी बनकर रही—सचमुच तू औरत नहीं एकदेवी है मेरी लाल ···एक देवी है तू।'

'मां—मां—।' मुन्नी की आवाज थर-थरा गई—वह शोभना के सीने से लग गई, शोभना ने रोते हुये उसे प्यार करते हुये कहा—

'यह झूठ है कि तू मेरा सगी बेटी नहीं है —मेरी सगी बेटी होती तो वह भी शायद मुझे इतना प्यार न देती, मेरी इतनी सेवा न करती—मैंने तुझे अपनी कोख से जन्म नहीं दिया तो क्या हुआ—अब तो तू मेरे शरीर का एक अंग है।'

'मां—मां—।'

'मेरी चाँद —मेरी लाल।

सेठ साहब ने भी आगे बढ़ कर पद्मिनी के सिर पर हाथ फेरा और आंसुओं भरी आँखों से भर्राई आवाज के साथ बोले—

'अनजाने में मैंने जाने तुझे क्या कह दिया बेटी—मैं तेरे आगे हाथ जोड़ता हुं — मुझे क्षमा कर दे—।'

'डैडी —भगवान के लिए ऐसा मत कहिए—डैडी।'

पद्मिनी रोती हुई सेठ साहब से लिपट गई। सारे बाराती आश्चर्य मे खड़े श्रद्धा की दृष्टि से पद्मिनी को देख कर आपस में कह रहे थे—

'सचमुच यह तो लड़की नहीं देवी है देवी।'

'अरे, कौन अपने बचपन के प्यार को इस प्रकार ठुकरा सकता है '

'जबकि उसने ठीक से अपने पति को देखा भी नहीं होगा।'

'और फिर अगर लड़की चाहती तो यह भेद सदा भेद ही रहता।'

'स्पष्ट है—अगर उसका मामा किसी से न कहता तो वह बात खुलती ही नहीं।'

'लड़की आराम से अपने प्रमी के साथ जीवन गुजारती।'

'यह है हिन्दुस्तानी सभ्यता का सही उदाहरण।'

'नारी को कितना उठा दिया है— ।

'पवित्र अग्न कूंड का सम्मान करना कोई इससे सीखे—सात फेरों का महत्व।'

'भई वाह —वाह—वाह।'

'लोग भाँति-भांति की बातें कर रहे थे

और मुन्नी सेठ साहब के सीने से लगी सिस-कियां भर रही थी।

खांसते-खांसते दुलारी का बुरा हाल हो गया था ·· आंखें जैसे उबली पड़ रही थीं, फेफड़े फटे जा रहे थे और अविनाश जल्दी-जल्दी दुलारी का सर दबा रहा था···उसकी आंखों में आंसू कंपकंपा रहे थे और होंठ सूख कर नीले हो गए थे। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी और पपोटे इस प्रकार सूज गए थे कि जैसे वह बड़ी देर से रो रहा हो। खांसते हुए दुलारी के होंठों से थरथराती हुई-सी आवाज निकली—

'पानी—पानी—।'

'मां—मैं पानी ला दूं मां ?'

अविनाश ने झपटकर पानी का गिलास भरा और विस्तर के पास आया—दुलारी ने कांपकर 'न' क संकेत में सिर और हाथ हिलाते हुए कहा—

'नहीं नहीं बेटा—मैं—मैं तेरे हाथ का पानो नहीं पी सकती।'

'मां—।' अविनाश की आवाज भर्रा गई।

'मैं—मै मजबूर हूं बेटा—मैंने तेरे पिता की सौगन्ध खाई थी कि जब तक—जब तक तू फर्स्ट नहीं आएगा—मैं—मैं तेरे हाथ का पानी नहीं पियूंगी।'

'मां—' अविनाश रोता हुआ बोला, भगवान के लिए अब तो सौगन्ध तोड़ दो मां।'

'बेटा—।'

'हां माँ, अब अगर तुम सौगन्ध नहीं तोड़ोगी तो शायद इस जीवन में मैं तुम्हारी यह सौगन्ध पूरी नहीं कर सकूंगा।'

'अविनाश—।'

'मां—अविनाश अब इतना टूट चुका है कि उसमें जीवन के साथ एक कदम भी आगे बढ़ने की शक्ति नहीं रह गई—तुम तो जानती ही हो मां मैंने बचपन से मुन्नी को एक मूर्ति के समान मन-मन्दिर में सजाकर रखा था—मां जब तक मुन्नी मुझे मिली नहीं थी तब तक मुझे विश्वास था कि एक-न-एक दिन मेरी मुन्नी मुझे जरूर मिल जाएगी—उसे पा लूंगा और मेरी तपस्या व्यर्थ नहीं जाएगी—तो मां भगवान ने मेरी तपस्या पूरी कर दी—मुझे मुन्नी मिल भी गई और मेरा साहस बढ़ गया—।

'लेकिन मां—मैंने मुन्नी को एक बार फिर खो दिया—और अबके ऐसा खोया कि शायद अब कभी मुझे मेरी मुन्नी नहीं मिलेगी।'

बोलते-बोलते उसकी आवाज रुंध गई वह फिर बोला—

'मां ऐसी हालत में मेरे लिए मरना-जीना सब कुछ व्यर्थ हो गया है, लगता है इस जीवन में कुछ रहा ही नहीं—सब कुछ खाली-खाली और सूनासूना हो गया है मां—ऐसी दशा में प्रथम आने की बात तो एक ओर···मैं एक शब्द भी पढ़ नहीं सकता।'

दुलारी की आंखें भीग गईं और वह भर्राई हुई आवाज में बोली—

'नहीं बेटे·· भगवान के लिए ऐसा मत कहो—मैं तेरी मां हू बेटे—कोई भी मां अपने बेटे को इतना दुखी नहीं देख सकती—मैं स्वयं मुन्नी के पास जाऊंगी—उसके आगे झोली फैलाकर अपने बेटे के खुशी की भीख मांगूगी।'

'मां···!' अविनाश की आवाज कंप-कपा गई, 'यह तुम क्या कह रही हो मां, मेरे लिए तो ऐसी कल्पना करना भी पाप है, मुन्नी किसी और की पत्नी है मां—भगवान न हमारी रेखाओं म मिलन की रेखा रखी

शेष पृष्ठ १० पर
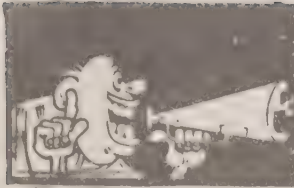
अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

इन्द्रजीत सिंह, चंचल—बेरमो : चाचा जी, गरीबी कब अच्छी लगती है ?

उ० : जब गरीब को अमीराना ठाठ की इच्छा न हो। वरना गरीब की हालत हमारी तरह होगी और वह हालत है :

भगवान ने किस्मत में मेरी लिख के गरीबी,
फरमाया, मिजाज इसका अमीराना बना दो।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया—मण्डला : चाचा जी, यदि मैं जिन्दगी भर हंसता रहूं तो क्या होगा ?

उ० : लोग आपको पकड़कर पागल खाने पहुंचा देंगे और आपकी कमर पर लिख देंगे।

ये फसाना है समझने का ना समझाने का,
जिन्दगी काहे को है, ख्वाब है दीवाने का।

विजय कुमार गुप्ता—झरिया : चाचा बातूनी जी, यदि आपको चांद पर भेज दिया जाए तो वहां पहुंच कर आप क्या करेंगे ?

उ० : साढ़े चार लाख मील की दूरी से दीवाना के अंक आपको भेजा करेंगे और इस एतराज से बच जायेंगे कि अंक आपको लेट क्यों मिलते हैं।

रविन्द्र नाथ सरीन—लुधियाना : अकलमन्द आदमी धोखा कब खाता है ?

उ० : जब वह स्याना कौआ बन जाता है।

मदन किशोर होतवानी—रायपुर : रिश्ते कब टूट जाते हैं ?

उ० : जब रिश्तों की मजबूती का पता चलता है।

राज कुमार देवकुलियार—मोतिहारो : वह कौन सी वस्तु है जो जलती है पर जलती हुई दिखाई नहीं देती ?

उ० : इसके लिए मुकेश ने बहुत साल पहले एक गाना गाया था।

दिल जलता है तो जलने दे, आंसू ना बहा
फरियाद ना कर,
तू पर्दा नशीं का आशिक है, तू नामे वफा
बदनाम ना कर।

मुकेश कोठारी—रतलाम : चाचा जी, यदि पति-पत्नी में झगड़ा हो जाए तो क्या करना चाहिए ?

उ० : या तो हमारी तरह मंदिर पर प्रशाद चढ़ाना चाहिए, भगवान से यह प्रार्थना करने के लिए कि झगड़ा कभी समाप्त न हो, या पत्नी की फोटो सामने रख कर यह गाना गाना चाहिए :

तेरा ही तसव्वुर है, महफिल हो के तनहाई,
समझ कोई दीवाना, जाने कोई सौदाई।

तू आये तुझे देखू और जां से गुजर जाऊं,
इस बात पे जिन्दा है, अब तक तेरा शैदाई।
इल्जाम हर एक हंसकर हमने सहा बेगाना,
होने ना दी चाहत की हमने कभी रुसवाई।

रामलाल शर्मा—पानीपत : चाचा जी, मैं दिल्ली आकर आपसे मिलना चाहता हूं, कृपया अपने घर का पता बताइए।

उ० : हम दिल्ली वालों का क्या ठौर-ठिकाना। हमारे लिए अकबर इलाहाबादी ने कहा है :

हुये इस कदर मुहज्जिब, कभी घर का मुंह
ना देखा,
कटी उम्र होटलों में, मरे अस्पताल जाकर।

सुरेश सेठी—गुड़गांवा : आपको विधान सभा चुनाव के लिए टिकट दिया जाये तो आप किस पार्टी से टिकट लेना पसन्द करेंगे ?

उ० : कांग्रेस पार्टी के अतिरिक्त बाकी तो कोई टो पार्टी के बराबर महत्वपूर्ण नहीं है।

प्रेम बाबू शर्मा—दिल्ली : चाचा जी, प्यार में आदमी कुर्बानी कब देता है ?

उ० : इस बात से अनुमान लगा लीजिए कि कुर्सी के प्यार में आजकल जनता पार्टी और लोकदल का हर नेता एक-दूसरे की कुर्बानी देने पर तुला हुआ है।

अश्रफ मंगा—रत्नगिरी : मैं किसी को दिल दे बैठा हूं, क्या करूं ?

उ० : इस शेर का जायज़ा कीजिए।

दिल सी शै हुस्न पर फिदा कर दी,
बेवकूफी की इंतेहा कर दी।

अजय कुमार अग्रवाल—काशीपुर : चाचा जी मुझे एक पागल की जरूरत है। क्या आप दीवाना से रिटायर होने के बाद यहां आ सकते हैं ?

उ० : दीवाने और पागल में बड़ा अन्तर होता है। आप के [illegible] में ऐसा लगता है, जैसे एक पागल को एक पागल की जरूरत है।

प्रितपाल सिंह और सतपाल—पटियाला : चाचा जी, क्या आप भूत प्रेत को मानते हैं ?

उ० : उस समय मानना ही पड़ता है, जब दीवाना फ्रेंडज क्लब में आपकी फोटो दिखाई दे जाये, या शीशे में हम अपनी शक्ल देख लें।

बलवन्त सिंह विष्ट—अलमोड़ा : चाचा जी, हमारी राजनीति के बारे में आपका क्या विचार है ?

उ० : जंगल में भेड़ आगे-आगे होती हैं और उन्हें गडरिया चराता है। राजनीति में भेड़ें गडरिये को हांकती हैं और उसे घास चराती हैं।

मुन्ना रस्तोगी—रिसिया : भीख मांगते भिखारी से लोग आगे बढ़िये क्यों कह देते हैं ?

उ० : इसलिए कहते होंगे कि फिर उनका नम्बर भी आ सके, जैसे बस में चढ़ने वाला हर आदमी अपने से आगे वाले से कहता है, 'आगे बढ़िये।''

एन० के० निन्दी—कपूरथला : चाचा जान, चोर ईमानदार कब बन जाता है ?

उ० : जब वह गलती से चाचा बातूनी के घर में घुस जाता है, और वहां से चोरी में उसे केवल मूंगफली के छिलके ही हाथ आते हैं।

रोमा रानी—सासाराम : अंकल जी, क्या आप किसी को अपने से बड़ा बातूनी भी मानते हैं ?

उ० : कैसे मान सकते हैं। छोटे-मोटे की बात छोड़िये। बड़े-बड़े नेता जिन के मुंह लाउडस्पीकर के भोंपू बने हुए थे, आज उनके भी मुंह पर अलीगढ़ के मोटे ताले पड़ गये हैं।

रूपम बच्चन—मथुरा : चाचा जी, क्या मैं अभिनेता बन सकता हूं !

उ० : अगर आपके पास सड़कों पर चटखाने के लिए बहुत सी जूतियां हैं तो अवश्य बन सकते हैं।

मुहम्मद रज्जाक खान—पिथौरागढ़ : चाचा जी, एक लड़की मुझे देख कर हंसती है, पर बात नहीं करती। ऐसा क्यों ?

उ० : इस प्रश्न का उत्तर हम से पूछने की बजाये आप शीशे में अपनी शक्ल देख लेते तो अच्छा था।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२
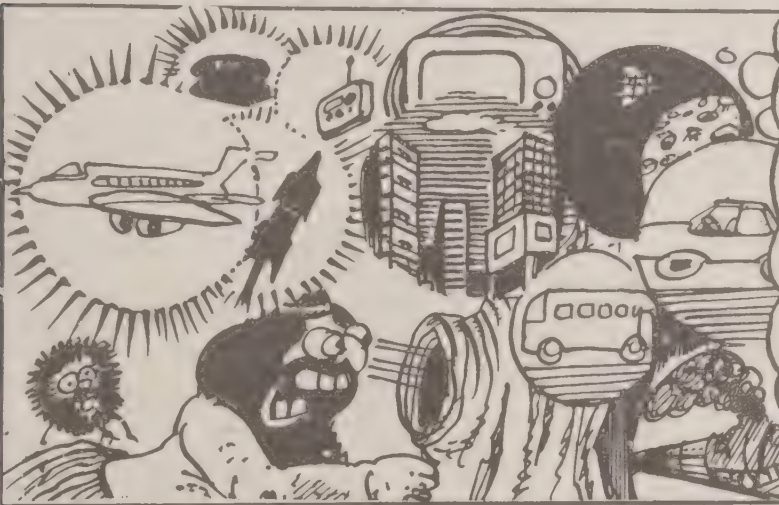
बड़ा अजीब नजारा है बीसवीं सदी का। लोग जंगल छोड़कर एक ही जगह शहरों में रह रहे हैं। रहने के लिए साठ, चालीस, बीस मंजिल ऊंची इमारतें हैं। हवाई जहाज नाम की चीज के अन्दर आदमी चिड़िया की तरह आसमान की सैर कर रहा है। सड़कों पर तेल से चलने वाले डिब्बे चल रहे हैं। उन्हें कार, बस के नाम से पुकारा जा रहा है। लोहे की सड़क पर हजारों लोग लिए रेलगाड़ी नाम की चीज दौड़ रही है। रेडियो नाम के डिब्बे से संगीत आ रहा है। बटन दबाते ही अंधेरी जगह उजाला हो रहा है। आदमी बैठे-बैठे फोन नाम की चीज पर सैकड़ों घाटी दूर के आदमी से बात कर रहा है। और यह एक और अजूबा आदमी चांद पर उतर रहा है……।
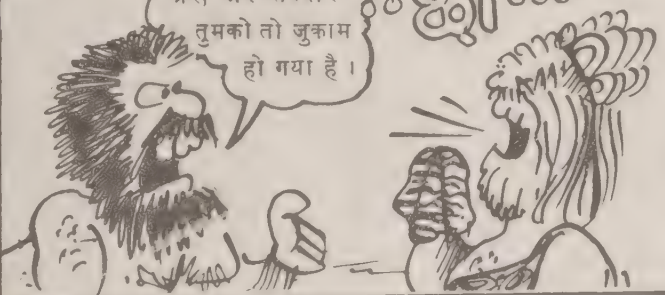
दड़ियल नन्द, हमने तुम्हारी बीसवीं सदी नाम के वक्त की बातें सुन लीं। यकीन नहीं होता कि ऐसा भी हो सकता है। खैर, मुझे सख्त जुकाम हो गया है। नाक बन्द है सर चकरा रहा है। तुम बीसवीं सदी में देखकर बताओ कि उस वक्त जुकाम का क्या इलाज कर रहे हैं। आदमी चांद पर गया है तो जुकाम का इलाज तो मामूली सी बात होगी।

अभी देखता हूं सरदार।

मैं साफ देख रहा हूं, बीसवीं सदी में इलाज करने वाले को डाक्टर कह कर पुकार रहे हैं। एक आदमी डाक्टर की ओर जा रहा है। उसे भी जुकाम है, छींक रहा है।
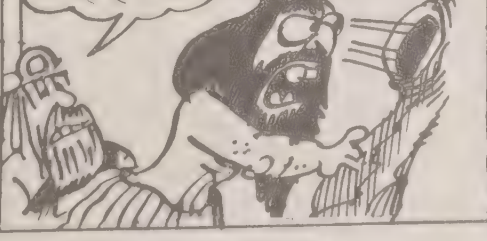
हां हां।

फैण्टम — जंगल शहर

व्यायाम कर रही हो उस खास दिन के लिए ।
हां, अंकल डेव ।
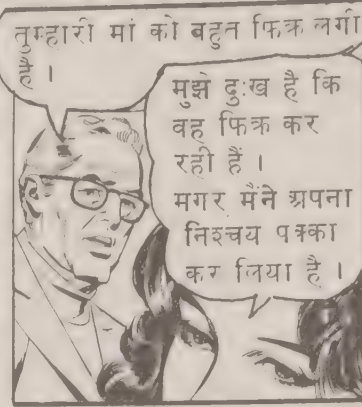
तुम्हारी मां को बहुत फिक्र लगी है ।
मुझे दुःख है कि वह फिक्र कर रही हैं । मगर मैंने अपना निश्चय पक्का कर लिया है ।

मैं खोपड़ी वाली गुफा में ही जाऊंगी ।
?!

मैं चाहती हूं कि खोपड़ी वाली गुफा में ही बच्चे को जन्म दूं । क्योंकि वह यही चाहता है ।
दोबारा सोच लो डियाना, बहुत खतरनाक है ।
कोई अस्पताल नहीं, कोई डाक्टर नहीं ।
मुझे कोई डर नहीं अंकल डेव ! यह बहुत साहसिक घटना होगी ।

गहरे जंगल में···
तुम नहीं चाहते कि वह यहाँ जन्म दे ।
नहीं मिस तगामा··· बहुत खतरनाक है उसके लिए । शहर में अच्छा रहेगा ।

अगर डियाना यहां आती है··· मेरे पास नर्स की ट्रेनिंग है ।
शुक्रिया मिस तगामा । मगर मैं सोचता हूं कि वह शहर में ही रहे और मैं भी वहीं जाऊंगा ।

मगर शहर में···
डियाना तुमने बहुत अच्छा काम किया । अब तुम्हारा अगला काम यह है···
उसे अभी रोकना पड़ेगा डा० हेनरी ।

मैं छुट्टी पर बंगाला जा रही हूँ ।
हूं ! क्या यह यात्रा जरूरी है ?
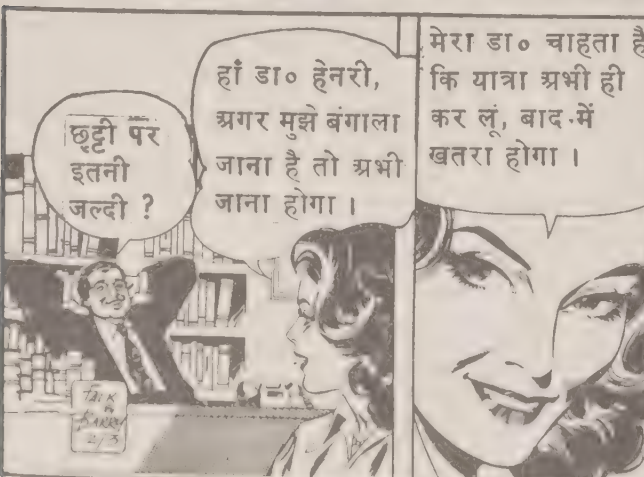
छुट्टी पर इतनी जल्दी ?
हां डा० हेनरी, अगर मुझे बंगाला जाना है तो अभी जाना होगा ।

मेरा डा० चाहता है कि यात्रा अभी ही कर लूं, बाद में खतरा होगा ।
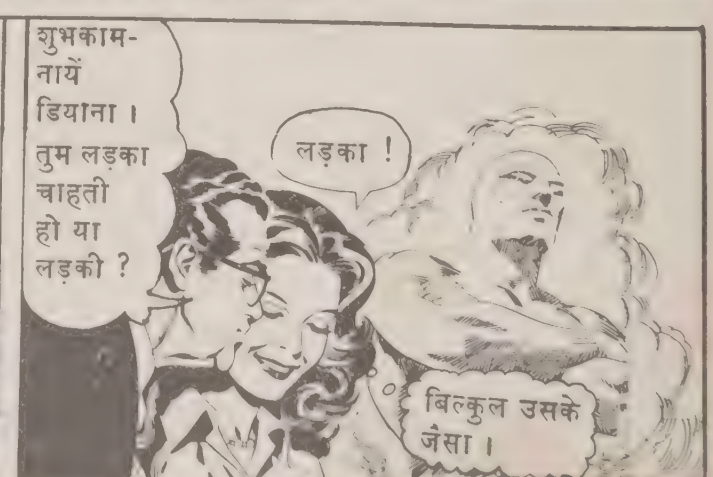
शुभकामनायें डियाना । तुम लड़का चाहती हो या लड़की ?
लड़का !
बिल्कुल उसके जैसा ।

विदेश को तार मि० वाकर के लिए बंगाला में ।
चलते-फिरते भूत के लिए । १३ तारीख को पहुंच रही हूं । मुझे खोपड़ी वाली गुफा पर मिलना ।

मुझे खोपड़ी वाली गुफा पर मिलना···
?!

तुम जंगल नहीं जा सकतीं. यह पागलपन है ।
नहीं···मां

MAWITAAN POST OFFICE
विदेशी तार
१३ तारीख को पहुंच रही हूं मुझे खोपड़ी वाली गुफा पर मिलना
चलते-फिरते भूत के लिए कुछ है ।
···तार ।

हमने कभी मि० वाकर को नहीं देखा वह कौन है ?
वो···मि० वाकर···।
चलते-फिरते भूत के लिए ।
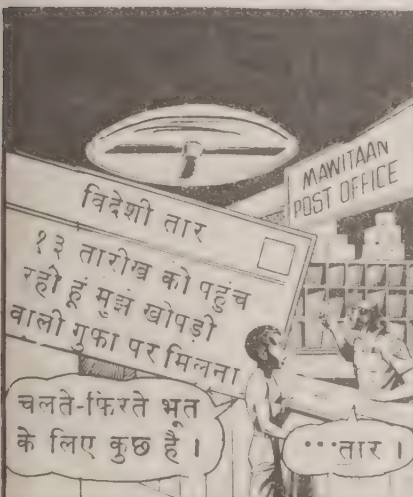
जंगल के किनारे पर ।
उसको तार है । दौड़ने वालों के साथ भेजूं ।
नहीं ! तार का मतलब जल्दी । यह चिड़िया, फोला बन्दर सेना के पास खबर ले जायेगी ।
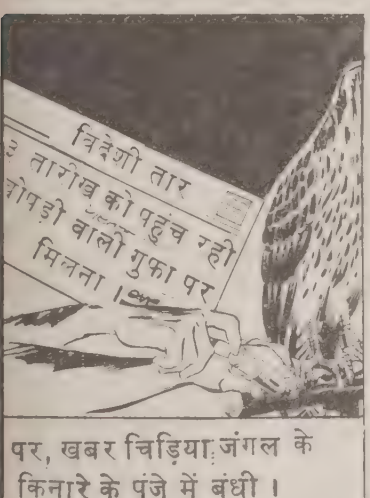
विदेशी तार
३ तारीख को पहुंच रही
ोपड़ी वाली गुफा पर मिलना ।
पर, खबर चिड़िया जंगल के किनारे के पंजे में बंधी ।

जाओ फोला ।

डियाना अपना मन बदल लो, यहीं पर बच्चे को जन्म दो । वह बुरा नहीं मानेगा ।
नहीं मां···मैंने उसे तार दे दिया है, वह मेरा इन्तजार करेगा. फिक्र मत करो मैं ठीक रहूंगी
शुभ कामनायें ।

मुझे यहां के सरदारों की मीटिंग में जाना है । अगर कोई खबर आये तो मुझे वहां भेज देना ।
खास कर डियाना से ?

हां रेक्स, खासकर उसका ।

फोला चिड़िया बांदर सेना तक पहुंच जाती है ।
फैण्टम के लिए खबर ।

खबर चिड़िया के पंजे से बन्दर के थैले में ।
जल्दी अपने स्वामी के पास जाओ । ची ची
ची ची

ची ची ची ची
©1979 King Features Syndicate Inc. World rights reserved

सरदारों की मीटिंग में ।
फैण्टम तुम्हारा क्या जवाब है ?
अ र र ...जरा सवाल दोहराइये ।

फैण्टम सरदारों की मीटिंग में उसे पता नहीं कि डियाना आ रही है ।

डियाना का सन्देश बांदर सेना द्वारा घने जंगल की ओर ।
विदेशी तार
रही हूं मुझे
वाली गुफा
मिलना ।
खबर पहुंचने में कभी-कभी देर हो जाती है ।

ची ची ।
बांदर सेना पर धावा ।

विदेशी तार
ची ची ची ।
गर्र र हिस्स गर्र र ।
डियाना का संदेश अब तक पहुंच गया होगा ।

मैं बहुत बेचैन हूं मैं उसको अब देखे बिना नहीं रह सकती । खोपड़ी की गुफा में ।

डियाना का संदेश रुक गया ।
ची ची ।
गर्र र हिस्स ।

सरदारों की यह मीटिंग बहुत अच्छी रही ।
तुम क्या सोचते हो चलते-फिरते भूत ।
हां...बहुत सुन्दर ...मेरा मतलब ...बहुत अच्छा ।

क्रमशः

प्र० : क्षुद्रग्रह कहां होते हैं और ये कितने बड़े होते हैं ?

उ० : क्षुद्रग्रह अधिकतर मंगल और बृहस्पति के बीच के क्षेत्र में पाये गये हैं। लगभग दो हजार क्षुद्रग्रहों के बारे में जानकारी है परन्तु अवश्य और भी बहुत से क्षुद्रग्रह सौरमंडल में होंगे। कुछ क्षुद्रग्रह इस क्षेत्र से दूर निकल जाते हैं। "इकारस" नामक क्षुद्रग्रह ऐसा ही एक ग्रह है जो सूर्य के करीब पहुंच कर फिर 'बुध' के निकट से होता हुआ फिर मंगल के नजदीक आ जाता है। कुछ क्षुद्रग्रह पृथ्वी की ओर भी बढ़ जाते हैं, "हरमस क्षुद्रग्रह" सन् १९३७ में पृथ्वी के निकट चन्द्रमा की दूरी से लगभग दुगुनी दूरी तक पहुंच गया था। तथा "इरोज क्षुद्रग्रह १९७५ में पृथ्वी से केवल २४०,००००० किलोमीटर तक आ गया था पृथ्वी और "इरोज" की आपस में टकराने की कोई आशंका नहीं थी।

क्षुद्रग्रह कुछ तो बहुत बड़े होते हैं, परन्तु अधिकतर अन्तरिक्ष में तैरते हुए बड़े पहाड़ों के समान होते हैं। सबसे बड़ा क्षुद्रग्रह "सीरस" है। ये ६३५ किलोमीटर आर-पार है। टेलीस्कोप की सहायता से पहिचाना जाने वाला सबसे प्रथम क्षुद्रग्रह है। इससे अगले छः वर्षों में तीन और बड़े क्षुद्रग्रह देखे गये। "पालास" ४८० किलोमीटर, "डानो" १९० किलोमीटर तथा "वैस्टा" ३८० किलोमीटर के हैं। 'वैस्टा' क्षुद्रग्रह सबसे चमकदार है, इसे बिना किसी टेलीस्कोप की सहायता के भी देखा जा सकता है। लगभग बीस क्षुद्रग्रह ही १६० किलोमीटर से बड़े हैं।

अनुमान है क्षुद्रग्रह ऐसे तत्वों से बने हैं जो कि सिकुड़कर सौरमंडल की रचना के समय ग्रह नहीं बन पाए, या कोई ऐसे पिण्डों के अवशेष हैं जो कि सौर मंडल में मंगल तथा बृहस्पति के बीच चक्कर लगा रही थी और अन्त में टूट कर छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखर गई थी।

प्र० : नाव बनाने का विचार सबसे पहले किस प्रकार हुआ होगा ?

उ० : यदि आप किसी नदी या जलाशय के निकट रहते हों और नाव जैसी किसी चीज के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञान न हो तो पानी को पार कर दूसरी ओर पहुंचने के लिए अवश्य ही आप कोई न कोई तरकीब ढूंढ़ने की कोशिश करेंगे। ठीक इसी प्रकार आदि मानव ने अपने इस विचार को कार्यान्वित करने के लिए किसी न किसी वस्तु की खोज की होगी। और उसने सोचा होगा कि पेड़ की टहनी या तनों को बाँध कर और डंडा या पेड़ का तना चप्पू के रूप में प्रयोग कर वो पानी को पार कर सकता है और यहीं नाव के विचार ने जन्म लिया।

पानी पर तैरने वाली वस्तुओं को एक साथ बांध कर बेड़ा या तरापा तैयार किया होगा। परन्तु 'तरापे' के साथ एक बड़ी कठिनाई है कि ये बहुत धीरे चलता है तथा पानी इसके ऊपर बीच से निकलकर आता रहता था, इसलिए आदि मानव ने कुछ तेज चलने वाली तथा सूखी रहने वाली पहली नाव पेड़ के तनों को खोखला करके बनाई थी। ये तरापे की तुलना में सूखी तथा तेज गति की थी परन्तु इस पर तरापे जितना सामान नहीं ले जाया जा सकता था तथा ये उलटती भी बहुत जल्दी थी इसी कारण आदि मानव ने इसमें सुधार करने का प्रयास किया। उसने इसके अगले तथा पिछले हिस्से को अच्छा बनाया। अधिक स्थिर बनाने के लिए इसके किनारों को फैला दिया तथा तले को चपटा दिया फिर उसने नाव की खोज की तथा इसके किनारों को तख्ते की सहायता से उठाने का प्रयास किया।

इसी बीच अब भी तैरापे का प्रयोग करने वालों ने भी इसमें सुधार किया। उन्होंने तैरापे के ऊपर लकड़ी के चोकोर टुकड़ों को लगाया और इस पर एक मंच भी बनाया। इससे उन्हें आराम और सुविधा प्राप्त हुई। एक प्रकार से इसे बड़े जहाजों के "डेक" की शुरुआत कह सकते हैं। तैरापे के किनारों को ऊपर उठाया तथा अगले और पिछले किनारों को भी ऊपर को मोड़ दिया। इस प्रकार 'आर्क' पंट या जंक कहलाने वाली चपटे तले की नाव तैयार हो गई।

इस काल में "डग आऊट" और तैरापे जैसी नावों में बहुत से सामान्य गुण पाये जाने लगे। और इस काल के बाद के नाव बनाने वालों ने इन दोनों प्रकार की नावों के गुणों का समन्वय किया। निश्चित रूप से ये कहा जा सकता है कि इन दोनों प्रकार की प्रथम नावों का मूल विचार आदि मानव का ही था।

प्र० : सामाजिक नृत्य का आरम्भ कब और कहाँ हुआ ?

उ० : नृत्य मनुष्य जीवन की अमूल्य निधि है। नृत्य किसी न किसी रूप में मानव जाति के आरम्भ से ही देखने में आता है। आदि मानव पशुओं की नकल तथा प्रकृति के भिन्न रूपों को दर्शाने के लिए नाचते थे धार्मिक नृत्यों की परम्परा तो इतिहास से ही जुड़ी हुई है।

परन्तु सामाजिक नृत्य को इनसे भिन्न समझा जाता है। ये नृत्य केवल नृत्य का आनन्द लेने के लिए ही किया जाता है। आश्चर्य की बात है कि ऐसे नृत्य का इतिहास भी बहुत पुराना है। प्राचीन यूनानी सामाजिक नृत्य द्वारा मनोरंजन के बहुत शौकीन थे। उदाहरण के लिए "ऐरिसटोटल" का मत था कि नृत्य बहुत अमूल्य है क्योंकि ये मनुष्य के आचरण तथा कार्य को दर्शाता है। "होमर" भी नृत्य को बहुत अच्छा समझते थे। इसके विपरीत "सिसिरयो" जो की कट्टर रोमन थे नृत्य को हीन समझते थे।

यूनान में हर पर्व तथा भोज में नृत्य का आयोजन अवश्य होता था। सोकेरटस तथा प्लेटो द्वारा भी नृत्य को अच्छा माना गया था। मिस्र में नृत्य का सामाजिक रूप चार हजार वर्ष से चला आ रहा है। यहाँ हर प्रकार के रात्रि भोज में अतिथियों के सत्कार में नृत्य किया जाता है। धार्मिक नृत्यों का भी यहाँ बहुत महत्व था। इसके अलावा स्पेन में भी नृत्य बहुत लम्बे अरसे से किया जाता है यहां के अधिकतर नृत्य अरब शैली पर आधारित हैं।

फ्रांस ऐसा देश है जहाँ सामाजिक नृत्य की वास्तविक उन्नति हुई। हालाँकि बहुत से नृत्यों का आरम्भ दूसरे देशों में हुआ, परन्तु फ्रांस में इनके रूप को निखारा गया। आरम्भ में इस कार्य को प्रोत्साहन देने का श्रेय श्रीमती कैथरीन-डी-मैसीडी को दिया गया है। इन्हें सामाजिक नृत्यों से प्रेम था और इन्होंने ही नृत्य को राज-दरबारों से घरों में पहुंचाया है। लुई XIV के शासन काल में वैरसैल्स में सामाजिक नृत्य चरम सीमा पर था। इन दिनों अत्यन्त प्रभावशाली तथा सुन्दर बैले नृत्यों का आयोजन किया गया।

क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सिलबिल पिलपिल

हैप्पी बर्थडे टू यू

भाई जी, गरीबचन्द का आज जन्म दिन है, क्या हमको उसका बर्थ डे मनाना चाहिए ?

जरूर मनाना चाहिए ! जब लोग अपने कुत्ते और बिल्लियों का जन्म दिवस मना सकते हैं तो हम अपने चूहे का नहीं मना सकते ? हम खूब धूमधाम से मनायेंगे ।
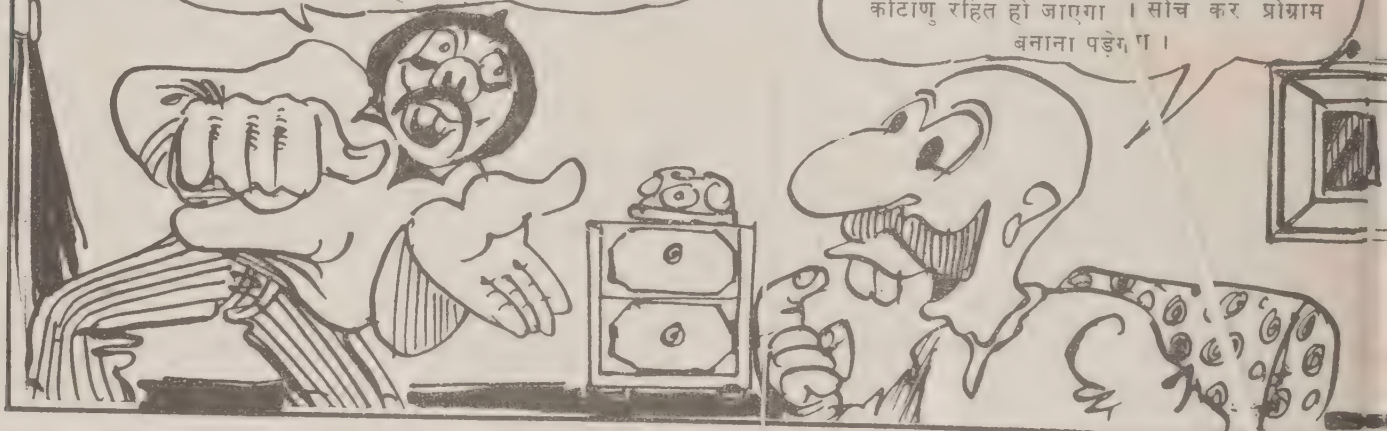
फिर यह चूहा कोई मामूली चूहा नहीं है। दिमाग तो इसका पन्द्रह हार्स पावर का है। बातें भी अमूल मक्खन जितनी नमकीन करता है ।

हम तो जन्म पत्री देखकर ही इसके लिए बर्थ डे गिफ्ट खरीदेंगे। शास्त्रों में लिखा है कि हर कार्म दिशा शूल, लग्न मुहूर्त तथा ग्रहों की दशा का ख्याल करके करना चाहिए. इससे अनिस्ट की कोई आशंका नहीं रहती।
एं ! यह क्या ? सत्यानाश हो इस चूहे का। इसने तो कबाड़ा कर दिया ! हमें दिन दहाड़े धोखा दे दिया।
है ?

क्या हो गया भई ? मेरी जन्म पत्री देखकर थमारे चेहरे धरती की तरफ क्यों लटक गये ? कहीं शनि और मंगल दोनों मिलकर रम्मी तो नहीं खेलने लगे मेरे सातवें घर में।

नापाक दरिन्दे, चूहे बनाम गरीबचन्द हमें तेरी जन्म पत्री देखकर आज पता लगा कि तूने हमारे साथ कितनी बड़ी गद्दारी की है। जन्म पत्री में लिखा है कि तू रात को बारह बज कर तेरह मिनट पन्द्रह सैकेंड पर पैदा हुआ था ? तू रात को पैदा हुआ ? क्यों पैदा हुआ तू रात को ? दिन को क्यों नहीं पैदा हुआ ?
मैं दिन को पैदा हुआ या रात को उससे थम दोनों की सेहत पर कौन सा असर पड़ता है ?
HISSS
GRRRR!

नामाकूल हमने तेरी बर्थडे मनाने के लिए कितने प्रोग्राम बनाये थे, कितने सपने संजोये थे ? तूने सब खाक में मिला दिया। तू रात को पैदा हुआ इसलिए हम किस तरह जन्म दिन मना सकते हैं ? जन्म रात तो कोई मनाता ही नहीं।
रात को ही दिन समझ लो।

मारु तेरे सिर पर यह स्टूल ? साफ-साफ बता तू दिन को क्यों नहीं पैदा हुआ ? रात को पैदा होने के पीछे किसकी शरारत है ?
अभी बताता हूं··· अभी बताता हूं भई ! यह स्टूल तो नीचे रख ले।

बात यह थी याड़ियों कि जिस दिन मैं पैदा होने वाला था उस दिन मेरठ में लाल कुर्ती बाजार में हिंदू-मुस्लिम दंगा हो गया । मिलीटरी वाले ग्रा गये । उन्होंने सारे शहर में कर्फ्यू लागू कर दिया । ग्रब तम ही बताग्रो जब चारों तरफ कर्फ्यू लगा हो तो मैं कैसे बाहर आ सकता था । जो कोई बाहर ग्राता उसी को गोली से. उड़ा दिया जाता था । रात को कर्फ्यू हटा तो तब कहीं मुझे पैदा होने का मौका मिला । समझे इब थम मेरी मजबूरी को ।
फिर तो बेचारे चूहे की गलती नहीं है । इसके पांव में जंजीर पड़ी थी । यह बेचारा जमना तीर जाता भी तो कैसे ?
प्लेग के पिस्सू तू हमें बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहा है ? कर्फ्यू बाहर शहर में था तेरे बिल में तो नहीं था । पैदा होने के लिए तुझे मां के पेट से ही तो बाहर ग्राना था कौन सा बीड़ी-सिगरेट लेने मार्किट की तरफ जाना था ?
तू इंतजार करके रात की बजाय दूसरे दिन भी तो पैदा हो सकता था ?
लेकिन मेरे भाई-बहन तो पैदा हो गये थे । ग्यारह भाई बहन थे मेरे ! वह बाहर ग्रा गये तो मैं ही ग्रन्दर रह कर क्या करता ? मुझे भी बाहर आना पड़ा ।
ग्रगर तेरे भाई-बहन कुए में कूद पड़े तो तू भी कूद जाएगा ? तेरी यह बहानेबाजी यहां नहीं चलेगी ! समझा ?
क्या समझा स्वाह ?
हम तो आपस में एक-दूसरे पर यूं ही गरम हो रहें हैं याड़ी । इसमें मेरा कतई दोष नहीं है । नहीं थम दोनों का कोई हाथ है । मैं कैसे, कब, कहां, क्यों ग्रौर कितने बजे पैदा हुआ यह सब करने कराने वाला काली कम्बली वाला है । मैं रात को पैदा हुग्रा इसका जिम्मेदार ऊपर वाला ही है ।
HIROSHIM
PEARL HARBOUR
NAGASAKI

अरे अरे, यह क्या कर रिहा है ? यह किसे पकड़ लाया तू ?

यही तो है जो हमारे ऊपर वाले फ्लैट में रहता है । तू ही तो कह रहा था कि तेरे रात को पैदा होने का जिम्मेदार यही ऊपर वाला है । मैं इसको पकड़ कर लाया ताकि हम इसकी यहां पिटाई करें । क्यों इसने तुम्हें रात को पैदा किया ?

छोड़ दे इनको । यह मेरे रात को पैदा होने के लिए जिम्मेदार नहीं हैं । ऊपर वाले से मेरा मतलब नीली छतरी वाले से था भगवान से था न कि ऊपर वाले फ्लैट में रहने वाले से ।
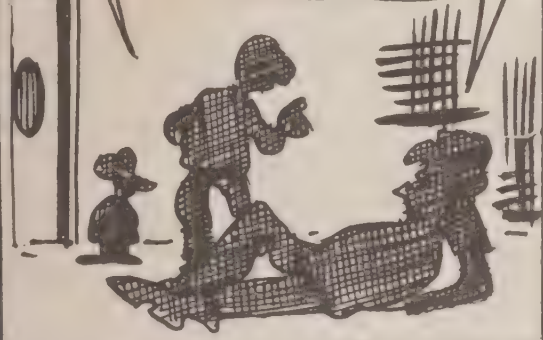
अब ऐन मौके पर गरीब चन्द कहां चला गया ? मैंने तो सारे कमरे छान मारें ।

अभी-अभी तक तो यहीं था, मैंने बाजार से लाये गुब्बारे उसकी पूंछ में बांधे थे पांच एक मिनट पहले, तब तक तो यहीं था ।

फिर पांच मिनट के अन्दर कहां गायब हो गया ? यहां केक और मोमबत्ती उसका इंतजार कर रही हैं । कहाँ उड़ गया ?

शायद बर्थडे देवता उसे खा गया । वह रात को पैदा हुआ था ना ? हमें उसका बर्थडे नहीं मनाना चाहिए था । देवता नाराज हो गया होगा ।

यहीं कहीं होगा । आसमान में थोड़े ही उड़ जायेगा ।

पिलपिल सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़ें ।

किरमानी का करिश्मा

१७ फरवरी १९८० को जब भारतीय विकेट कीपर किरमानी ने बायकॉट का बम्बई में गोल्डन जुबली टैस्ट में कैच लिया तो विश्व के दसवें विकेट कीपर बने जिन्होंने १०० बैट्समैनों के कैच या स्टम्प किया। इससे पूर्व वे १००० रु० भी पूरे कर चुके थे। १०० डिस्मिसल व १००० रन पूरे करने का दोहरा करिश्मा करने वाले वे विश्व के नौवें विकेट कीपर हैं।

उन नौ विकेट कीपरों के आंकड़े

वि. कीपर	देश	टैस्टमैच	रन	शतक	कैच	स्टम्प	कुल
एलेन नॉट	इंग्लैंड	८९	४१७५	५	२३३	१९	२५२
राडनी मार्श	आस्ट्रेलिया	५८	२५२३	३	२१२	९	२२१
टी. जी. इवान्स	इंगलैंड	९१	२४३९	२	१७३	४६	२१९
डैरेक मरे	वे. इंडीज	५५	१८१८	--	१६३	८	१७१
वसीम बारी	पाक	५६	१०३५	--	१३५	१८	१५३
जे. एच. वेट	द. अ.	५०	२४०५	४	१२४	१७	१४१
डब्ल्यू ओल्डफील्ड	आस्ट्रेलिया	५४	१४२७	--	७८	५२	१३०
जे. एम. पार्कस	इंगलैंड	४६	१९६२	२	१०३	११	११४
सैयद किरमानी	भारत	४२	१४३९	१	७७	२३	१००

लोकिन्द्र 'कमल'—फिरोजपुरी

प्र० : भारत में कितने टैस्ट ग्राऊंड हैं।

उ० : भारत में मुख्य टैस्ट ग्राऊंड आजकल बम्बई, देहली, कलकत्ता, मद्रास, बम्बई और कानपुर में है। बम्बई व मद्रास में दो दो टैस्ट ग्राऊंड हैं। बीते जमाने में हैदराबाद तथा लखनऊ भी टैस्ट सेन्टर रह चुके हैं।

राजेश सहगल—हनुमानगढ़

प्र० : गति के हिसाब से इन बॉलरों को क्रम दीजिए। कपिल देव, घावरी, मदन लाल, राजेन्द्र सिंह घई, संदीप पाटिल व सुनील वाल्सन।

उ० : कपिलदेव, . घावरी, वाल्सन, मदनलाल, घई व पाटिल।

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर

प्र० : क्रिकेट खेलने वाले देशों की संख्या कम क्यों है?

उ० : क्रिकेट एक लम्बा समय नष्ट करने वाला धीमा खेल है।

अजय कुमार तिवारी ग्वालियर

प्र० : क्या गावस्कर के बाद चेतन चौहान ही भारत के सर्वश्रेष्ठ ओपनिंग बल्लेबाज हैं?

उ० : इस समय तो ऐसा ही लगता है।

विनोद रा० ठा०—नागपुर

प्र० : भारतीय विकेट कीपर (इंजीनियर) का विश्व में कौन सा स्थान है? उन्होंने अपने टैस्ट मैचों में कितने कैच लिए और स्टंप कितने किये?

उ० : इन्जीनियर इस समय खेल में नहीं हैं वे अवकाश ले चुके हैं। उन्होंने ८२ कैच व स्टम्पिंग किये।

जयन्त नाथ वर्मा—बगहा

प्र० : माइक प्रोक्टर को टैस्ट में क्यों नहीं लिया जा रहा है? माइक प्रोक्टर काउन्टी में कितने विकेट लिए।

उ० : माइक प्रोक्टर दक्षिण अफ्रीका के हैं तथा दक्षिण अफ्रीका का दूसरे टैस्ट खेलने वाले देशों ने बहिष्कार कर रखा है।

मनोज कुमार—पानीपत

प्र० : मैं एक मध्यम तेज गति का गेंद बाज हूं। कालिज में सिफारिश न होने से टीम में शामिल न हो सका। मैं टेस्ट टीम में सम्मिलित होना चाहता हूं। कृपया कोई उचित उपाय बतायें जिससे मुझे टैस्ट टीम में शामिल होने का अवसर प्राप्त हो सके।

उ० : कालिज स्तर पर टीम में शामिल होने के लिए सिफारिश की जरूरत नहीं पड़ती अपितु अपने खेल से दूसरों को प्रभावित करना पड़ता है। टैस्ट टीम में शामिल होने का तो सपना ही छोड़ दीजिये। सिफारिश जैसी चीजों की अपने दिमाग में घर कर लेने की बजाय आप अपने खेल के सुधारने में लगे होते तो ज्यादा अच्छा होता।

अनिल कुमार—कानपुर

प्र० : पाकिस्तान के खिलाड़ी माजीद खान व इमरान खान भाई-भाई हैं?

उ० : इमरान माजिद खां के रिश्ते में भतीजे लगते हैं।

धमतरी ताराचन्द—पोटानी

प्र० : क्रिकेट खिलाड़ी गैरी सोबर्स ने ६ बॉल पर ६ छक्के टैस्ट मैच में लगाये थे अथवा काऊन्टी मैच में।

उ० : काऊंटी मैच में।

रजनीश कुमार—खगाड़िया

प्र० : 'क्रिकेट खिलाडियों का जीवन अपने ढंग का होता है या...?

उ० : क्रिकेट लाभदायक व्यवसाय बन गया है अतः जरूर क्रिकेटरों का जीवन भी अपने अलग ढंग का है।

सतपाल कुमार धार—नागपुर

प्र० : ईरानी ट्राफी का संक्षिप्त इतिहास और उसकी कीमत बताइए।

उ० : ईरानी कप का पहला मैच १८ मार्च १९६० के दिन से खेला गया। यह मैच बीते वर्ष के रणजी चैम्पियन तथा शेष भारत की टीमों के बीच खेला जाता है। लगभग दो हजार रुपए मूल्य का यह कप बम्बई की एक कम्पनी स्पेंसर एन्ड कम्पनी ने दिया था। इस कप को भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने अपने कोषाध्यक्ष श्री जैड-आर-ईरानी की सेवाओं की याद में आरंभ किया। १९६० वर्ष में जब यह शुरू हुआ उसी वर्ष रणजी ट्राफी के पच्चीस वर्ष भी पूरे हुए थे।

सुनील कुमार मंधानी—भाटापारा (म. प्र.)

प्र० : अभी पूरे विश्व में सबसे अच्छा बैट्स मैन कौन है?

उ० : इस समय तो विश्व के सबसे अच्छे बैट्समैन वैस्टइंडीज के बिवियन रिचर्डस हैं। हाल में ही उन्होंने अस्वस्थ होने के बावजूद कमाल कर दिखाया। वे लंगड़ाते हुए बैटिंग करने आये तथा एक टांग पर ही आस्ट्रेलियाई गेंदबाजों की धुनाई कर धुंआधार १५४ रन बनाकर सबको अचंभे में डाल दिया। आक्रामक गेंदबाजों में लिली भी था। विवियन रिचर्डस का गेंदबाजों पर इतना आतंक बैठ चुका है कि उनका कहना है उनके लिए दुनिया का सुन्दरतम दृश्य विवियन रिचर्डस का आऊट होकर पैविलियन की ओर लौटना है।

डा. सतीन्द्र जैन 'सुदर्शी'—जबेरा

प्र० : क्या किसी भारतीय टैस्ट खिलाड़ी ने एक ही पारी में ३ शतक बनाये हैं?

उ० : नहीं। भारत का उच्चतम एक इनिंग्ज का स्कोर वीनू मांकड़ का २३१ रनों का है।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

चना कुरमुरा

● एक महिला हांफती हुयी हस्पताल पहुंची और नर्स से पूछने लगी, 'सिस्टर, मुझे खबर मिली है कि मेरे पति रोड़ी कूटने वाले इन्जन के नीचे आ गये और इसी अस्पताल में लाये गये हैं। कृपया बताइये उनका बैड नम्बर क्या है ?

नर्स बोली, 'बैड नं० १३ से बैड नं० २८ तक पर बिछे हुए हैं।''

● महाशय नौकरानी पर बरस रहे थे, 'मैंने तुम्हें कितनी बार समझाया कि रात को मैं देर से घर आऊं तो मालकिन को यह न बताना कि मैं कितने बजे आया था। फिर भी तुमने उसे बता दिया ?' नौकरानी बोली, 'मैंने नही बताया साहब। जब मालकिन ने मुझे पूछा कि साहब कितने बजे लौटे थे रात को तो मैंने उनसे कहा कि मैंने घड़ी की तरफ नही देखा। मैं तो नाश्ता तैयार करने में लगी थी।'

● प्रेमी, 'प्रिये, कान में कोई ऐसी मीठी बात कह दो जिससे मेरे पैर जमीन पर न लगें।'

प्रेमिका, 'जाओ गले में फांसी लगा लो।'

● मरीज डाक्टर से बोला, 'डाक्टर साहब मेरी मदद कीजिए। मुझे रोज एक ही सपना आता है। सपने में टीना मुनीम मुझे आलिंगन में लेना चाहती है और मैं हर बार उसे हाथों से दूर हटा देता हू।'

डाक्टर, 'आप चाहते है कि यह सपना आना बन्द हो जाये ?'

मरीज, 'नही डाक्टर, आप मेरे हाथ काट दीजिए।'

● एक आदमी रोज पानी के गरारे करता था। पड़ौसी का लड़का रोज यह तमाशा देखता। एक दिन उसने पूछ ही लिया, 'अंकल आप रोज मुंह में पानी डाल गले मे यह गर्ल-गर्ल क्या करते हैं ?'

आदमी बोला, 'बेटे, मैं देखता हूं कि मेरा गला लीक तो नही कर रहा।'

● एक आदमी बहुत सुस्त था। एक बार वह बीमार पडा तो डाक्टर आया तथा दवा दे गया और ताकीद कर गया कि दवा को खूब हिला कर लेना। चार दिन बाद डाक्टर फिर आया तो देखा दवा वैसे ही पड़ी है। उसने कारण पूछा तो पता लगा कि सुस्त महाशय भूकंप की प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि भूकंप आये और दवा हिल जाये तो उसे लें।

● प्रेमी प्रेमिका फिल्म देख रहे थे। हीरो व हीरोइन में जम कर प्रेमलीला हुई। प्रेमिका आह भर कर बोली, 'हम भी ऐसा ही प्रेम करेंगे।'

प्रेमी बोला, 'पागल हुयी हो ! पता है इनको ऐसा प्यार करने के लिए कितने लाख रुपये मिलते हैं ?'

● एक भुलक्कड़ प्रोफेसर एक रोज कुछ खरीदने के लिए दस-बारह दुकानों में गये। घर लौटने पर पता लगा कि वह अपना छाता किसी दुकान पर भूल आये। वह दोबारा गये। पहली दस दुकानों पर छाता नही मिला। ग्यारहवीं दुकान में उनको अपना छाता मिल गया तो वे दुकान दार से बोले 'शुक्र है दुनिया में कहीं तो ईमानदारी बची है। अब देखिये पहली दस दुकान वालों ने मुझसे कहा आपका छाता नहीं है यहां।'

● दो बूढ़े पार्क में मिले। एक ने पूछा, 'आपकी उम्र क्या है और आपका शौक क्या है ?' उत्तर मिला, 'मेरी उम्र ९२ वर्ष है और शतरज खेलना शौक है। और आप, पहले ने कहा, 'मैं रोज दो बोतल शराब पीता हूँ। चालीस सिगरेटें पीता हूं। और आवारा गर्दी करता हूं। मेरी उम्र २३ वर्ष है।'

पृष्ठ १७ का शेष भाग

ही नहीं थी ।'

अविनाश की आवाज भारी हो गई और वह उठकर तेजी से कमरे के बाहर निकल गया । दुलारी चुप-चाप उसे जाते देखती रह गई, उसकी आंखें भीगी हुई थी और होठों पर ऐसी कम्पन थी जैसे कुछ बोलना चाहती हो लेकिन उसकी आवाज न निकल रही हो...।

कार सेठ साहब के बंगले के कम्पाउंड में पहुंच कर रुक गई ।

ड्राइवर ने जल्दी से उतरकर दरवाजा खोला और दुलारी ने कदम बाहर निकाले तो उनकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया गया । बड़ी मुश्किल से उन्होंने अपने ऊपर नियन्त्रण जमाया और कार से उतरीं...फिर लड़खड़ाती हुई बरामदे की सीढ़ियां चढ़ने लगीं—उनका पूरा बदन थर-थर कांप रहा था—आंखों के सामने बार-बार अंधेरा छा जाता— माथे पर पसीना आ गया था—बरामदे में गिरते- गिरते बचीं—उन्हें तुरन्त ही एक नौकरानी ने सम्भाल लिया था। दुलारी ने हांफते हुए कहा—

'जीती रहो बेटी—जीती रहो ।'

नौकरानी दुलारी को सम्भालते हुए अन्दर की ओर बढ़ने लगी तो रास्ते में दुलारी ने पूछा—

'क्या सेठ साहब घर में है ?'

'जी नहीं—।' नौकरानी ने कहा, 'वह मालकिन को लेकर हस्पताल गए हैं—आंखों की पट्टी बदलवाने ।'

'ओह—यशपाल और पद्मिनी तो होंगे ।'

'जी—यशपाल जी टिकिट रिजर्व करवाने स्टेशन गए हुए हैं—घर में केवल पद्मिनी बिटिया है ।'

'तब फिर मुझे पद्मिनी बिटिया के पास ही पहुंचा दे बेटी ।'

'जी—अच्छा ।'

नौकरानी दुलारी को संभालकर सीढ़ियाँ चढ़ने लगी । दुलारी की सांस और भी अधिक फूल गई थी, उसका पूरा बदन पसीने से भर गया था और वह थर-थर कांपने लगी थी । थोड़ी देर बाद दुलारी को पद्मिनी के कमरे के सामने ले जाकर नौकरानी ने दस्तक दी ।

'कौन...?' अन्दर से पद्मिनी की आवाज आई ।

'बिटिया...यह आपसे कोई मिलने आई हैं ।'

कदमों की आहटें गूंजी और फिर दरवाजा खुल गया । पद्मिनी दुलारी को सामने खड़ा देखकर भौंचक-सी रह गई...उसने कांपते स्वर में कहा—

'चाची...आप—!'

'हां बेटी—मैं—मैं आपसे मिलने आई हूं ।'

पद्मिनी ने जल्दी से दुलारी को संभाल लिया । नौकरानी चली गई । पद्मिनी दुलारी को सहारा देकर अन्दर लाई और सोफे पर बिठाती हुई बोली—

'चाची—आपकी तबीयत खराब है तो आप ने आने का कष्ट क्यों किया—मुझसे कहा होता—मैं स्वयं चलकर आ जाती ।'

'बेटी—' दुलारी ने सांसों पर काबू पाने का प्रयत्न किया, 'बेटी कुआं प्यासे के पास नहीं जाता, प्यासा स्वयं चलकर कुएं के पास आता है—?'

'जी—मैं समझी नहीं ।' पद्मिनी ने दुलारी से आंखें बचाने का प्रयत्न करते हुए कहा ।

'बेटी—मैं तो जो कुछ कहना चाहती हूं वह बाद में कहूंगी...पहले तू जरा अपनी हालत देख—दो दिन में ही क्या हालत हो गई है तेरी...रंग पीला पड़ गया है—फूल सा चेहरा मुर्झा गया है—आंखों के पपोटे कितने सूज गए हैं ।'
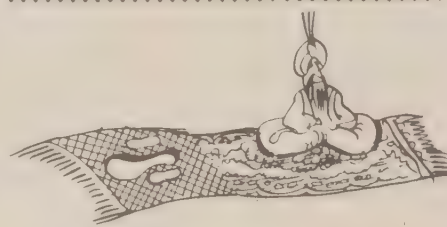
'न...न—नहीं तो चाची- ।' पद्मिनी ने स्वयं को संभालने का प्रयत्न करते हुए कहा, 'मैं तो ठीक हूं—मैं बिल्कुल ठीक हूं ।'

'तू अपना दुःख छुपाने का अपने-आपको धोखा दे सकती है, लेकिन तेरा दुःख तेरे अंग-अंग से फूटा पड़ता है— तू कितनी दुखी है इसका अनुमान तो तेरी सूरत देखकर लगाया जा सकता है ।'

'चाची—!' पद्मिनी का गला रुंध गया ।

दुलारी ने धीरे से उठकर पद्मिनी के कंधे पर हाथ रखा और भर्राई हुई आवाज में बोली—

'देख बेटी...जो हालत तेरी है वही अविनाश की भी है—दो दिन से उसने एक दाना तक नहीं खाया—रोते-रोते उसकी आंखें सूज गई हैं—दो दिन में ही वह बरसों का बीमार दिखाई देने लगा है ।'

'चाची...' पद्मिनी की आवाज भर्रा गई, 'यह सब आप मुझे क्यों बता रही हैं ?'

'इसलिए कि उसके दुःख का इलाज तेरे और केवल तेरे ही पास है ।'

'चाची—' पद्मिनी हड़बड़ा गई ।

'जरा सोच तो बेटी—जब केवल दो ही दिन में उसका यह हाल हो गया है तो पूरा जीवन वह कैसे गुजार सकेगा ? उसने बचपन ही से अपने मन-मन्दिर में तेरी मूर्ति सजाकर रखी थी और जब कभी मैं उसे शादी के लिए कहती थी तो उसका उत्तर एक ही होता था—मां, मेरे हाथों की रेखा में केवल मुन्नी ही का नाम लिखा है—और मेरा प्यार सच्चा है तो एक न एक दिन मुझे मुन्नी जरूर मिलेगी ।'

'चाची—!!' पद्मिनी रो पड़ी ।

'बेटी—मैं जानती हूं, यह हालत केवल अविनाश की नहीं है...तेरी भी यही हालत होगी क्योंकि मैं जानती हूं कि तू भी बचपन से ही अविनाश से प्यार करती थी—तेरी भी जब दो दिन में यह हालत हो गई है तो पूरा जीवन कैसे बीतेगा ।'

'बस कीजिए चाची—भगवान के लिए आगे मत बोलिए ।'

'कैसे न बोलूं बेटी ।' दुलारी भर्राई हुई आवाज में बोली, 'मैं अविनाश की मां हूं—तू तो जानती है कि मैंने अविनाश के पिता के देहान्त के बाद अविनाश की मां बन कर ही नहीं बल्कि बाप बनकर भी उसे पाला है—अविनाश के होठों पर हंसी देखने के लिए आज तक न जाने कितनी घड़ियां न्यौछावर कर दी हैं—मेरा इकलौता बेटा ही तो है वह । उसके भविष्य के लिए मैंने हीरापुर छोड़ा था और उसी के भविष्य के लिए मैंने सौगन्ध खाई थी कि जब तक वह पढ़ाई में प्रथम स्थान प्राप्त नहीं करेगा मैं उसके हाथ से पानी नहीं पियूंगी ।

'बेटी, आज अविनाश मुझे अपने हाथों से पानी पिलाने के लिए तरसता है—इस बरस उसने मेरे दूध की सौगंध खाई थी कि वह अब के परीक्षा में कालिज में ही नहीं बल्कि प्रांत भर में प्रथम आएगा—लेकिन बेटी—अब उसका दिल ऐसा टूटा है कि उसका मन पढ़ाई में बिल्कुल ही नहीं लगता । जब वह पढ़ेगा नहीं परीक्षा क्या देगा ? और जब वह परीक्षा नहीं देगा तो प्रथम कैसे आयेगा ? और वह प्रथम नहीं आएगा तो मैं अपनी सौगंध कैसे पूरी कराऊंगी...कैसे मैं उसके हाथ से पानी पियूंगी ? कैसे वह मुझे अपने हाथों से पानी पिलाएगा ?'

'चाची—!!'

'बेटी—क्या तू एक मां को बेटे के हाथों गंगाजल पिये बिना मरते देखकर खुशी अनुभव करेगी ?'

'चाची—भगवान के लिये ऐसा मत कहिए चाची, मैं आपके आगे हाथ जोड़ती हूं ऐसा मत कहिए—मैं उसके लिए भला कर ही क्या सकती हूं—'

'तू चाहे तो सब कुछ कर सकती है बेटी—तू चाहे तो मेरे बेटे के होठों की मुस्कराहट लौट सकती है—उसके अन्दर सोई हुई आकांक्षा जाग सकती है।'

'चाची—!!' पद्मिनी हड़बड़ा कर पीछे हट गई।

'बेटी ! मैं तुमसे अपने बेटे की खुशियों की भीख मांगने आई हूं।' दुलारी ने रोते हुए पद्मिनी के सामने आंचल फैलाकर कहा, 'भगवान के लिये मेरे बेटे के होठों की मुस्कराहट लौटा दे—मैं तेरे आगे हाथ जोड़ती हूं।''

'चाची !' पद्मिनी कांपती आवाज में बोली, 'भला मैं—मैं कैसे लौटा सकती हूं यह खुशियां···? कैसे लौटा सकती हूं उनके होठों की मुस्कराट ?'

'उसके जीवन में वापस आकर।'

'चाची—' पद्मिनी की आवाज थरथरा गई, 'यह आप क्या कह रहीं हैं चाची ? मेरे लिए तो ऐसा सोचना भी पाप है—मैं किसी और की पत्नी हूं।'

'किसकी पत्नी है तू ?'

'वही जिसके साथ मेरे फेरे हुए थे।'

'अपने जीवन में कितनी बार देखा है तूने उसे ?'

'चाची—।'

'नहीं नहीं···बता मुझे—क्या तुझे उसकी सूरत याद है ?' तू उसके चरित्र, उसके स्वभाव के बारे में कुछ जानती है ? यह जानती है कि वह क्या पसंद करता है, क्या पसंद नहीं करता ?'

'चाची—'

'जब तेरे उसके साथ फेरे हुए थे तो क्या तेरे पिता ने तेरी इच्छा पूछी थी ? क्या उस लड़के की भी सहमति ली गई थी ?'

'चाची···!'

'मुन्नी बेटी—शादी नाम है खुशी का···समाज के उन सुंदर बंधनों का जिनसे एक मर्द और एक औरत का जीवन स्वर्ग बन जाता है—लेकिन शादी उसे भी कहते हैं जिसका अर्थ लड़का और लड़की जानते हों। जब तेरी शादी हुई थी तो क्या तू शादी का अर्थ समझती थी ? शादी का अभिप्राय: जानती थी ? भगवान भी नर और नारी को अपनी-अपनी पसंद प्रगट करने का अवसर देता है···क्या तूने उस लड़के को पसंद किया था। जिससे तेरे फेरे हुए थे ? क्या उस लड़के ने तुझे पसंद किया था ? जब तुम दोनों न शादी का अर्थ समझते थे और न अभिप्राय, तो फिर यह शादी कैसी हुई ? मैं तो ऐसी शादी को नहीं मानती जिसमें लड़के और लड़की की पसंद शामिल न हो।'

'चाची···' पद्मिनी कंपकंपाती आवाज में बोली, 'भगवान के लिए ऐसा मत कहिए···मैंने पवित्र अग्नि कुंड के गिर्द उनके साथ विधिवत फेरे लिए हैं।'

'बेटी···पवित्र अग्निकुंड के गिर्द फेरे लेते समय क्या तूने अपने मन में अपने पति को सात वचन भी दिये थे ? बेटी ! अग्निकुंड के गिर्द फेरों का महत्व यह है कि अग्नि उन सात वचनों की साक्षी बन जाती है जो धर्मानुसार पति-पत्नी एक-दूसरे को देते हैं। लेकिन जिस समय तेरी शादी हुई थी तू न अग्निकुंड के महत्व को समझती थी और न उन वचनों को जानती थी—जब तुमने मन से सोच-समझकर वचन ही नहीं दिये होंगे तो फिर शादी कैसी···? यह शादी भगवान ने कैसे स्वीकार की होगी ?'

'बस चाची···भगवान के लिए बस कीजिए।' पद्मिनी कंपकंपाती अवाज में बोली, 'भगवान के लिए मेरा धर्म नष्ट मत कीजिए···मुझे इस सभ्यता को तोड़ने का कोई अधिकार नहीं जो हमारे जीवन का शताब्दियों से अंग बन चुकी है। मुझे नहीं मालूम कि मैंने उन्हें कोई वचन दिए थे या नहीं—मैं तो बस यही जानती हूं कि जिसके साथ मेरे फेरे हुए थे वही मेरे पति हैं···मेरे देवता हैं···मेरे सब कुछ हैं।'

'बेटी—।' दुलारी ने भर्राई हुई आवाज में कहा, 'मैं तेरे आगे हाथ जोड़ती हूं—मेरे बेटे के जीवन को नर्क मत बना।

'चाची···' पद्मिनी ने रोते हुए दुलारी के पैर पकड़ लिए और बोली, 'मैं आपके पांव पड़ती हूं चाची···भगवान के लिए मुछे मेरे धर्म से मत भटकाइये···मुझे अपने धर्म का पालन करने दीजिए—अपने कर्त्तव्य को निभाने दीजिए—भावना में मत डालिए मुझे।''

'बेटी···!' दुलारी ने रोते हुए कहा, 'तो यह तेरा आखिरी फैसला है ?'

'हां चाची—मैं अपने फैसले से नहीं हट सकती।'

'तुझे मेरे ऊपर न सही अविनाश पर भी तरस नहीं आता ?'

'चाची···उनका यह घाव समय का मरहम भर देगा···उन्हें प्रार्थना कीजिए कि मुझे भूल जायें।'

'तूने अविनाश को ठीक नहीं समझा बेटी···उसके दिल का घाव कभी नहीं भरेगा···उसके दिल का घाव कभी नहीं भरेगा।'

फिर दुलारी निराश होकर उठ गई और लड़खड़ाती हुई दरवाजे की ओर बढ़ीं··· वह चलती हुई बड़बड़ाती जा रही थीं—

'मेरे भाग्य में शायद भगवान् ने बेटे और बहू का सुख देखना नहीं लिखा···मैं शायद अपने बेटे के हाथों गंगा जल पिये बिना ही परलोक सिधार जाऊंगी···हे भगवान् ! मैं कितनी अभागिन हूं ?'

पद्मिनी ने अपने होंठ दृढ़ता से भींच लिए थे लेकिन उसकी आंखों से टप-टप आंसू गिरते जा रहे थे—और फिर जैसे ही दुलारी दरवाजे से निकल दृष्टि से ओझल हुई पद्मिनी बिस्तर पर औंधी गिर पड़ी और तकिए में मुंह छुपाकर सिसकियां भरने लगी।

दुलारी लड़खड़ाती हुई नीचे उतरी··· वह पागलों की तरह अपने-आप बड़बड़ाती जा रही थी—

'मैं अपने बेटे के हाथों गंगाजल पिए बिना ही मर जाऊंगी···।'

'मैं अपने बेटे के हाथों गंगाजल पिए बिना ही मर जाऊंगी।'

दुलारी लड़खड़ाती हुई रेलिंग को पकड़कर धीरे-धीरे नीचे उतर रही थी··· उसकी आंखें दूर शून्य में घूर रही थीं··· शायद उसे स्वयं अपनी खबर नहीं थी कि वह कहां है—फिर जैसे ही वह नीचे पहुची हाल में दरवाजे से सेठ साहब और शोभना अन्दर प्रविष्ट हुए। सेठ साहब दुलारी को देखकर बुरी तरह ठिठक गए। दुलारी उनकी ओर नहीं देख रही थी···वह जाने कहां देखती बड़बड़ाती जा रही थी—

'मैं अपने बेटे के हाथों गंगाजल पिए बिना मर जाऊंगा···।'

'मैं अपने बेटे के हाथों गंगाजल पिए बिना मर जाऊंगो।'

एक बार वह लड़खड़ई तो सेठ साहब ने जल्दी से आगे बढ़ते हुए कहा—

'दुलारी बहन।'

उन्होंने दुलारी को गिरने से सम्भाल लिया···शोभना चौंककर बोलीं—

'क्या दुलारी बहन आई हैं ?'

'हां शोभना—!' सेठ साहब ने उत्तर दिया।

दुलारी आंखें फाड़-फाड़कर सेठ साहब को देखने लगी जैसे उन्हें पहचानने का प्रयत्न कर रही हो। सेठ साहब ने आश्चर्य से पूछा—

शेष आगामी अंक

कर्ज की अदायगी

—राजकुमार भ्रमर

किसी बड़े नगर में एक साहूकार रहता था। दूर-दूर गांवों के लोग उसके यहां आते और कर्ज ले जाते। जब उनके पास धन आ जाता, तब वे साहूकार को मूल और ब्याज चुका आते। वह साहूकार दूर-दूर तक अपनी ब्याज-खाऊ नीति के लिए मशहूर था।

एक बार दो चालाक और ठग व्यक्ति दूर किसी गांव से उसके पास पहुंचे। उन्होंने साहूकार से पचास रुपए कर्ज मांगे। बूढ़े साहूकार ने उनका नाम-पता पूछा। बाद में सवाल किया—'मैं तुमको कर्ज तो दे दूंगा, पर यह लौटाओगे कब ?'

'बहुत जल्दी।' उनमें से एक ने उत्तर दिया। उसका नाम बंसी था।

'फिर भी, आखिर कब तक ?' साहूकार ने फिर वही प्रश्न किया।

दूसरे व्यक्ति ने जवाब दिया—'अगले जन्म में !' उसका नाम छोटेलाल था।

बंसी और छोटेलाल का विचार था कि साहूकार उनकी बात से चौंकेगा। पर उस समय उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ जब बूढ़े साहूकार ने पास बैठे मुनीम को आज्ञा दी—'मुनीमजी, खाते में लिख लो। ये लोग रुपया अगले जन्म में लौटायेंगे और इन दोनों के हस्ताक्षर ले लो !'

मुनीम ने खाता खोला। जरूरी लिखा-पढ़ी कर, उसे हस्ताक्षर के लिए बंसी और छोटेलाल के सामने रख दिया। वे दोनों आश्चर्य से साहूकार और मुनीम का चेहरा देखने लगे। ऐसी अजीब शर्तों की साहूकारी उन्होंने कभी न देखी थी। जब साहूकार ने उनसे जल्दी से हस्ताक्षर करने को कहा तो उन दोनों ने चुपके से हस्ताक्षर कर दिए। पचास रुपये जेब में डाल दोनों अपने गांव रवाना हुए।

रास्ते में वे दोनों साहूकार की मूर्खता और अपनी चालाकी के बारे में बातें करते रहे।

'अरे !' छोटेलाल बोला—'वह साहूकार कितना मूर्ख है ? कहीं अगले जन्म में भी उधार लौटाया जाता है ?'

बंसी भी अपनी चालाकी पर खुश था—'वही तो ! अपन ने उसे कैसा मूर्ख बनाया ? अब ये पचास रुपए अपने हो गए, समझो !'

'हां।' छोटेलाल ने कहा—'बेशक ! अब वह कानूनन हमसे रुपया वापस नहीं ले सकता।'

दोनों ऐसी ही बातें करते जा रहे थे। रास्ते में ही शाम हो गयी। उनका गाँव अभी दूर था। कृष्ण-पक्ष की अंधेरी रात में जंगल का रास्ता पार करने में उन्हें भय भी लगता था। मार्ग के ही एक गांव में वे रुक गए। एक किसान से उन्होंने रात काट लेने की आज्ञा मांगी। वे अपना-अपना कम्बल बरामदे में बिछाकर लेट गए।

पास ही किसान के दो बैल बंधे हुए थे। जब रात हो गयी और दोनों झपकियां लेने लगे, तब एकाएक बंसी चौंककर जाग उठा। उसने सुना, पास ही दो व्यक्तियों की बातचीत के स्वर आ रहे थे। उसने गर्दन इधर-उधर उठाकर देखा—कोई नहीं था, पर बातचीत बराबर चल रही थी। जब उसकी दृष्टि पास ही बंधे बैलों की ओर गयी, तो आश्चर्य से उसकी आंखें फटी रह गयीं। दोनों बैल मनुष्य की तरह बातें कर रहे थे। बंसी ने छोटेलाल को झकझोरकर जगाया—'देख, बैल बोल रहे हैं !'

छोटेलाल ने भी जागकर उनको बोलते सुना।

एक बैल बड़े उदास-से स्वर में दूसरे से कह रहा था—'मित्र, हमारे-तुम्हारे साथ की यह अन्तिम रात्रि है।'

'क्यों ?' पहला पूछ रहा था।

'इसलिए कि अपना जो मालिक है, उससे पिछले जन्म में मैंने दो सौ रुपये उधार लिए थे। उस जन्म में मैं दे नहीं पाया सो इस जन्म में महीनों उसकी गाड़ी में जुते रहकर उधार चुकायी है। कल मेरा श्रम दो सौ रुपये का पूरा हो जाएगा और सवेरे ही मैं मर जाऊंगा।'

'आह, मित्र ! यह कैसा संयोग है ! कल ही मेरी भी मृत्यु होने वाली है और कल ही तुम्हारी !' दूसरा बैल बोला।

'क्यों ?' पहले बैल ने कुछ चिन्तित होकर पूछा।

'क्योंकि मैंने भी तुम्हारी तरह पिछले जन्म में इसी मालिक से पांच सौ रुपए उधार लिए थे।' दूसरे बैल ने बताया—'कल सुबह तक बैल का जन्म लेकर मैंने इसकी जितनी सेवा की है, उससे साढ़े चार सौ रुपये चुकता हो जायेंगे। सवेरे ही एक व्यक्ति आकर मुझे पचास रुपये में इससे खरीद लेगा। इस तरह इसके पांच सौ रुपए लौट जायेंगे और मैं उस व्यक्ति को बिकने के बाद मर जाऊंगा।'

'पर इस तरह तो तुम उस खरीददार के पचास रुपये के कर्जदार हो जाओगे !' पहले बैल ने चिन्ता प्रकट की—'और वह कर्ज चुकाने के लिए शायद तुम्हें तीसरे जन्म में भी बैल बनना पड़ेगा !'

'नहीं !' दूसरे बैल ने उत्तर दिया। 'मुझे उस व्यक्ति से पिछले जन्म के पचास रुपये लेने हैं। इस तरह मैं अपना उधार चुका दूंगा और वह अपना चुकाएगा।'

'ओह !' पहला बैल एक गहरी सांस खींचकर बोला—'तो कल हम दोनों ही मरने वाले हैं। यह कर्ज चुकाने के लिए हमने कितनी तकलीफ उठाई है ! आओ, गले मिलें। कल न जाने मिल पायें, न मिल पायें।'

बैलों की यह बातचीत सुन रहे बंसी और छोटेलाल को काटो तो खून नहीं। वे भयभीत थे। एक तो इसलिए कि उन्होंने बैलों को आदमियों की तरह बातें करते सुना था। दूसरे इसलिए कि उन बैलों को पिछले

शेष पृष्ठ ३५ पर.

क्या किसी दूसरे उपग्रह पर आबादी है ?
इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हमारा अंतरिक्ष यान चाँद से भी आगे, एक अनजान उपग्रह की ओर बढ़ रहा है।
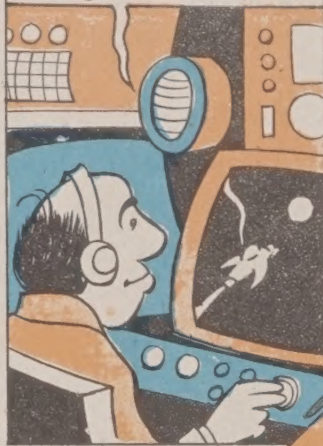
आगामी अंक में देखिए एक और फड़कता मचलता और फड़कता लाजवाब सवाल।
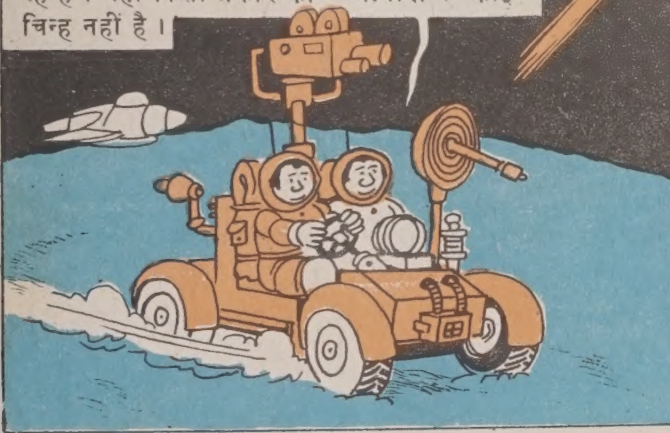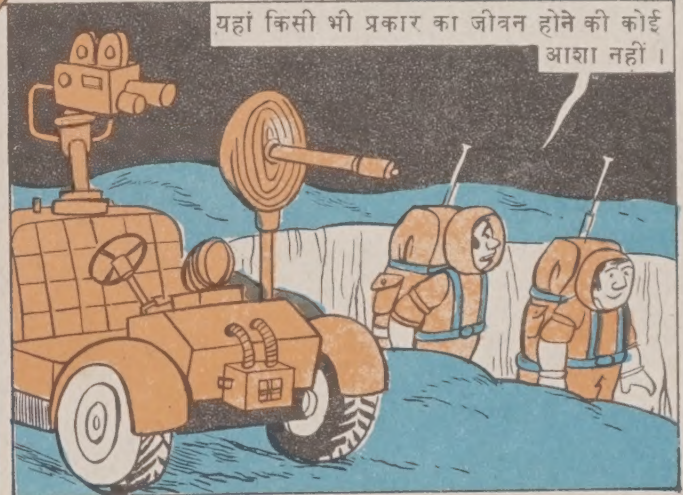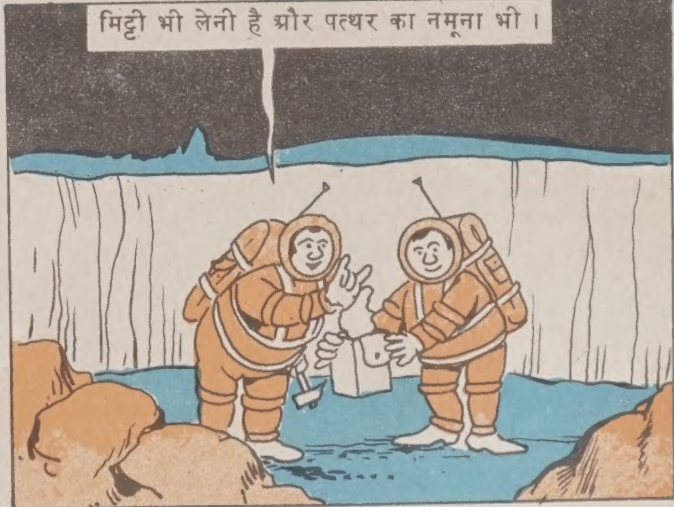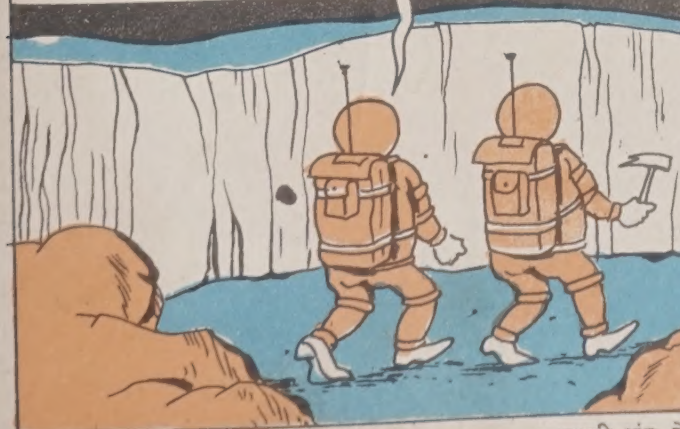
पृष्ठ ३२ का शेष भाग
जन्म का कर्जा चुकाने के लिए ही बैल बनना पड़ा था।

बड़ी रात तक उन दोनों को डर के मारे नींद न आयी। ऐसा लग रहा था जैसे दोनों बैल फिर बोलने लगे हैं। जैसे-तैसे दोनों ने अपना मन संभाला। यों सोचकर वे सो गए कि शायद सपना देखा है।

सवेरे जब दोनों उठे तो देखा बैल अपनी-अपनी जगह खड़े घास चर रहे हैं। बंसी और छोटेलाल को रात की बात याद कर स्वयं हंसी आयी। वे भी कैसे डरपोक हैं? भला कहीं बैल भी बातें किया करते हैं?

वे अपने गांव जाने के लिए कपड़े समेटने लगे। अभी वे कपड़े ही समेट रहे थे कि एकाएक उन्होंने देखा, एक बैल धड़ाम से गिरा और मर गया। भय से बंसी और छोटेलाल ने एक-दूसरे का मुंह ताका। उन्हें रात की बात याद हो आई।

बैलों का मालिक भी भीतर से आ गया था। वह दुख से भरा-भरा मरे हुए बैल को देख रहा था। उसकी जोड़ी टूट गई थी। इसी बीच एक आदमी आया।

उसने बैलों के मालिक से कहा—'तुम्हारी जोड़ी टूट ही गयी है।' उसने जीवित बैल की ओर इशारा किया—'अब इसका क्या करोगे? इसे पचास रुपये में मुझे बेच दो।'

मालिक ने दूसरा बैल उसे बेच दिया। पचास रुपये उससे ले लिए। बैल को लेकर जब खरीददार चला तो बंसी और छोटेलाल ने देखा—कुछ ही दूर जाने पर वह बैल भी गिरा और मर गया।

दोनों बैलों का कर्ज चुक गया था।

बंसी और छोटेलाल भय से कांप उठे। रात की सारी बातें सच थीं। वे जल्दी-जल्दी अपने कपड़े संभाल चल दिए, साहूकार के रुपए देने शहर की ओर लौट चले, ताकि कर्ज अगले जन्म में न चुकाना पड़े। उन्होंने स्वयं देखा था, किसी का धन इस जन्म में दबाया तो अगले जन्म में बैल बनकर चुकाना पड़ता है। ●●

प्रतियोगिताओं के परिणाम

अंक नं० ३ में प्रकाशित सोचिये प्रतियोगिता का सारांश व पहचानिये प्रतियोगिता की दीवानी बात किसी भी पाठक ने संतोषजनक नहीं भेजी है। अतः कोई भी पुरस्कार प्राप्त नहीं कर सका।

गेंद ढूंढ़िये प्रतियोगिता का सही हल
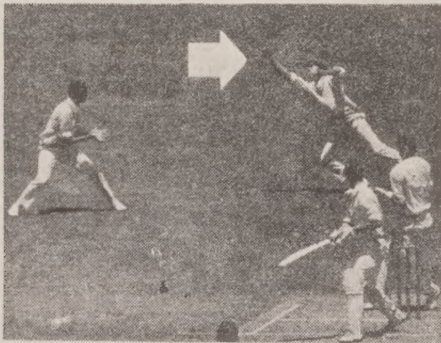
अंक नं०५ में प्रकाशित गेंद ढूंढ़ो प्रतियोगिता का हल दीवाना के हजारों पाठकों ने भेजा।

विजेता—संजीव जैन, २ नं. अनुकूल मुकर्जी लेन, कलकत्ता -६

चित्र वर्ग पहेली का सही हल हजारों पाठकों ने भेजा। निर्णय लाटरी द्वारा किया गया।

सही हल— खाक छानेगा

विजेता—जसपाल, मं० नं० ७७
मो० गढ़ैया, बरेली (उ० प्र०)

अंक नं० ५ में प्रकाशित सोचिये प्रतियोगिता **का सही हल—धैर्य और सोच-समझ कर कार्य करने में सफलता मिलती है।**

विजेता— राकेश कुमार बजाज सुपुत्र श्री शिवदयाल बजाज भीमा बहती, फतेहाबाद हिसार

दीवाना-कैमल रंग भरो प्रतियोगिता नं० १३ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—बालकिशन शर्मा, दिल्ली।
द्वितीय पुरस्कार—डावर अब्बास अब्बासी अमरोहा।
तृतीय पुरस्कार—सुनील कुमार, आगरा।

कैमल आश्वासन पुरस्कार

१. जयेश कुमार डांगे—सहारपुर, २. कुमारी सुखविन्दर जब्बल—होशियारपुर, ३. अंझर हुसैन—मुगल सराय, ४. शाहवर खां—रामपुर, ५. नरिन्दर पाल—जगाधरी।

दीवाना आश्वासन पुरस्कार

१. राजीव मसूरी—मुरादाबाद, २. रमेश कुमार—नई दिल्ली, ३. कुमारी सीमा गुप्ता शिमला, ४. कुमार राजेश विशकर्मा—शम्बरानाथ (थाना) (महाराष्ट्र), ५. महेश कुमार एन. करमानी—अहमदाबा।

सर्टीफिकेट

१. राजू…ब्यावर (राज०), २. अरविन्द कत्याल—चण्डीगढ़, ३. कुमारी नीताकौर गारचा—नागपुर, ४. हरकेश कुमार—नई दिल्ली, ५. कुमारी परमजीत कौर—बम्बई, ६. राजीव शर्मा—करनाल, ७. मदन गोपाल खत्री—बीकानेर, ८. दीपक गुप्ता—हरिद्वार, ९. विजयपाल सिंह केनटूरा—दिल्ली कैण्ट, १०. संजीव कुमार गर्ग—कलकत्ता।

ठाट

शादी के बाद,
देखकर पत्नी
के ठाट,
वह कहने लगे
हमसे यह बात
काश, मैं भी
लड़की होता।

अनिल 'धमाका,' मनीमजरी